हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

दिनांक : 27 मई 2023

विश्वविद्यालय के पत्रांक : Committee Cell (BOS-Hindi)/5461 दिनांक 19/05/2023 के क्रम में हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग द्वारा दिनांक 27 मई 2023 को आयोजित पाठ्यक्रम समिति की ऑनलाईन/ऑफलाईन बैठक संपन्न की हुई।

पाठ्यक्रम समिति की बैठक में निम्न सदस्य उपस्थित रहे।

उपस्थित सदस्यों की सूची :-

(1) प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी, संकायाध्यक्ष कला, विभागाध्यक्ष हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (Convener -I)
(2) डॉ० (श्रीमती) पूनम भारद्वाज, ए०के०पी० कॉलेज, हापुड़ (Convener -II) Online
(3) डॉ० स्मिता गर्ग, डी०डी० कॉलेज, डिबाई Online
(4) डॉ० वंदना शर्मा, एम०एम० कॉलेज, मोदीनगर Online
(5) प्रो० जितेन्द्र श्रीवास्तव, इग्नू, नई दिल्ली Online
(6) प्रो० सविता मोहन, पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व निदेशक, उच्चतर शिक्षा, देहरादून Online
(7) डॉ० योगेन्द्र शर्मा, 'अरूण', पूर्व प्राचार्य, 74/3, न्यू नेहरू नगर, रूड़की, उत्तराखण्ड Offline
(8) प्रो० सत्यकेतु सांकृत, अध्यक्ष हिंदी विभाग, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। Offline
(9) प्रो० बीना शर्मा, निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा Online

बैठक में सर्वसम्मति से निम्नांकित निर्णय लिए गए –

(1) वर्ष 2023–2024 एवं आगामी वर्षों के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ परिसर में संचालित निम्नांकित पाठ्यक्रमों में संशोधन पारित किया गया।

1. एम०ए० हिंदी
2. प्री० पीएच० डी० कोर्सवर्क हिंदी

(2) विश्वविद्यालय के निर्देशों के क्रम में हिंदी विषय के मौखिकी परीक्षा एवं अन्य परीक्षा संबंधी कार्यों के लिए आंतरिक एवं बाह्य परीक्षकों की सूची समिति द्वारा अनुमोदित की गई।

(3) हिंदी पाठ्यक्रमों मे शिक्षण सत्र 2022–2023 हेतु आवश्यकतानुसार संशोधन हेतु प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी, (Convener -I) को अधिकृत किया गया।

27.5.23		27/05
(प्रो० सविता मोहन)	(डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा अरूण)	(प्रो० सत्यकेतु सांकृत)
(प्रो० जितेन्द्र श्रीवास्तव)	(प्रो० बीना शर्मा)	(डॉ० स्मिता गर्ग)
(डॉ० वंदना शर्मा)	(डॉ० पूनम भारद्वाज)	(प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी) 27/5/2023

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

दिनांक : 27 मई 2023

विश्वविद्यालय के पत्रांक : Committee Cell (BOS-Hindi)/5461 दिनांक 19/05/2023 के क्रम में हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग द्वारा दिनांक 27 मई 2023 को आयोजित पाठ्यक्रम समिति की ऑनलाईन/ऑफलाईन बैठक संपन्न की गई।

पाठ्यक्रम समिति की बैठक में निम्न सदस्य उपस्थित रहे।
उपस्थित सदस्यों की सूची :-

(1) प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी, संकायाध्यक्ष कला, विभागाध्यक्ष हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (Convener-I)
(2) डॉ० (श्रीमती) पूनम भारद्वाज, एस०एस०वी० कॉलेज, हापुड़ (Convener-II) Online
(3) डॉ० रिमता गर्ग, डी०बी० कॉलेज, दिबाई Online
(4) डॉ० वंदना शर्मा, एम०एम० कॉलेज, मोदीनगर Online
(5) प्रो० जितेन्द्र श्रीवास्तव, इग्नू, नई दिल्ली Online
(6) प्रो० सविता मोहन, पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व निदेशक, उच्चतर शिक्षा, देहरादून Online
(7) डॉ० योगेन्द्र शर्मा, 'अरुण', पूर्व प्राचार्य, 74/3, न्यू नेहरू नगर, रुड़की, उत्तराखण्ड Offline
(8) प्रो० सत्यकेतु सांकृत, अध्यक्ष हिंदी विभाग, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। Offline
(9) प्रो० बीना शर्मा, निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा Online

बैठक में सर्वसम्मति से निम्नांकित निर्णय लिए गए –

(1) वर्ष 2023–2024 एवं आगामी वर्षों के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ परिसर में संचालित निम्नांकित पाठ्यक्रमों में संशोधन पारित किया गया।

1. एम०ए० हिंदी
2. प्री० पीएच० डी० कोर्सवर्क हिंदी

(2) विश्वविद्यालय के निर्देशों के क्रम में हिंदी विषय की मौखिकी परीक्षा एवं अन्य परीक्षा संबंधी कार्यों के लिए आंतरिक एवं बाह्य परीक्षकों की सूची समिति द्वारा अनुमोदित की गई।

(3) हिंदी पाठ्यक्रमों में शिक्षण सत्र 2022–2023 हेतु आवश्यकतानुसार संशोधन हेतु प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी, (Convener-I) को अधिकृत किया गया।

(प्रो० सविता मोहन) (डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा अरुण) (प्रो० सत्यकेतु सांकृत)

(प्रो० जितेन्द्र श्रीवास्तव) (प्रो० बीना शर्मा) (डॉ० रिमता गर्ग)

(डॉ० वंदना शर्मा) (डॉ० पूनम भारद्वाज) (प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी)

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

दिनांक : 27 मई 2023

विश्वविद्यालय के पत्रांक : Committee Cell (BOS-Hindi)/5461 दिनांक 19/05/2023 के क्रम में हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग द्वारा दिनांक 27 मई 2023 को आयोजित पाठ्यक्रम समिति की ऑनलाईन/ऑफलाईन बैठक संपन्न की हुई।

पाठ्यक्रम समिति की बैठक में निम्न सदस्य उपस्थित रहे।

उपस्थित सदस्यों की सूची :-

(1) प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी, संकायाध्यक्ष कला, विभागाध्यक्ष हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (Convener -I)
(2) डॉ० (श्रीमती) पूनम भारद्वाज, ए०के०पी० कॉलेज, हापुड़ (Convener -II) Online
(3) डॉ० स्मिता गर्ग, डी०डी० कॉलेज, डिबाई Online
(4) डॉ० वंदना शर्मा, एम०एम० कॉलेज, मोदीनगर Online
(5) प्रो० जितेन्द्र श्रीवास्तव, इग्नू, नई दिल्ली Online
(6) प्रो० सविता मोहन, पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व निदेशक, उच्चतर शिक्षा, देहरादून Online
(7) डॉ० योगेन्द्र शर्मा, 'अरूण', पूर्व प्राचार्य, 74/3, न्यू नेहरू नगर, रूड़की, उत्तराखण्ड Offline
(8) प्रो० सत्यकेतु सांकृत, अध्यक्ष हिंदी विभाग, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। Offline
(9) प्रो० बीना शर्मा, निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा Online

बैठक में सर्वसम्मति से निम्नांकित निर्णय लिए गए –

(1) वर्ष 2023–2024 एवं आगामी वर्षों के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ परिसर में संचालित निम्नांकित पाठ्यक्रमों में संशोधन पारित किया गया।

1. एम०ए० हिंदी
2. प्री० पीएच० डी० कोर्सवर्क हिंदी

(2) विश्वविद्यालय के निर्देशों के क्रम में हिंदी विषय के मौखिकी परीक्षा एवं अन्य परीक्षा संबंधी कार्यों के लिए आंतरिक एवं बाह्य परीक्षकों की सूची समिति द्वारा अनुमोदित की गई।

(3) हिंदी पाठ्यक्रमों में शिक्षण सत्र 2022–2023 हेतु आवश्यकतानुसार संशोधन हेतु प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी, (Convener -I) को अधिकृत किया गया।

27.5.23

(प्रो० सविता मोहन) (डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा अरूण) (प्रो० सत्यकेतु सांकृत)

(प्रो० जितेन्द्र श्रीवास्तव) (प्रो० बीना शर्मा) (डॉ० स्मिता गर्ग)

(डॉ० वंदना शर्मा) (डॉ० पूनम भारद्वाज) (प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी)

27/5/2023

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

दिनांक : 27 मई 2023

विश्वविद्यालय के पत्रांक : Committee Cell (BOS-Hindi)/5461 दिनांक 19/05/2023 के क्रम में हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग द्वारा दिनांक 27 मई 2023 को आयोजित पाठ्यक्रम समिति की ऑनलाईन/ऑफलाईन बैठक संपन्न की हुई।

पाठ्यक्रम समिति की बैठक में निम्न सदस्य उपस्थित रहे।
उपस्थित सदस्यों की सूची :-

(1) प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी, संकायाध्यक्ष कला, विभागाध्यक्ष हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (Convener-I)
(2) डॉ० (श्रीमती) पूनम भारद्वाज, ए०के०पी० कॉलेज, हापुड़ (Convener-II) Online
(3) डॉ० स्मिता गर्ग, डी०डी० कॉलेज, डिबाई Online
(4) डॉ० वंदना शर्मा, एम०एम० कॉलेज, मोदीनगर Online
(5) प्रो० जितेन्द्र श्रीवास्तव, इग्नू, नई दिल्ली Online
(6) प्रो० सविता मोहन, पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व निदेशक, उच्चतर शिक्षा, देहरादून Online
(7) डॉ० योगेन्द्र शर्मा, 'अरूण', पूर्व प्राचार्य, 74/3, न्यू नेहरू नगर, रूड़की, उत्तराखण्ड Offline
(8) प्रो० सत्यकेतु सांकृत, अध्यक्ष हिंदी विभाग, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। Offline
(9) प्रो० बीना शर्मा, निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा Online

बैठक में सर्वसम्मति से निम्नांकित निर्णय लिए गए —

(1) वर्ष 2023–2024 एवं आगामी वर्षों के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ परिसर में संचालित निम्नांकित पाठ्यक्रमों में संशोधन पारित किया गया।

1. एम०ए० हिंदी
2. प्री० पीएच० डी० कोर्सवर्क हिंदी

(2) विश्वविद्यालय के निर्देशों के क्रम में हिंदी विषय के मौखिकी परीक्षा एवं अन्य परीक्षा संबंधी कार्यों के लिए आंतरिक एवं बाह्य परीक्षकों की सूची समिति द्वारा अनुमोदित की गई।

(3) हिंदी पाठ्यक्रमों में शिक्षण सत्र 2022–2023 हेतु आवश्यकतानुसार संशोधन हेतु प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी, (Convener-I) को अधिकृत किया गया।

27.5.23

(प्रो० सविता मोहन) (डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा अरूण) (प्रो० सत्यकेतु सांकृत)

27.5.2023

(प्रो० जितेन्द्र श्रीवास्तव) (प्रो० बीना शर्मा) (डॉ० स्मिता गर्ग)

(डॉ० वंदना शर्मा) (डॉ० पूनम भारद्वाज) (प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी)

27/5/2023

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

पत्रांक : PB/हि॰वि॰/787
दिनांक : 08/06/2023

सेवा में,

प्रभारी कमेटी सैल,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

महोदय,

विश्वविद्यालय के पत्रांक Committee Cell (BOS-Hindi) दिनांक 19/05/2023 के क्रम में हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग द्वारा दिनांक 27 मई 2023 को आयोजित हिंदी विषय की पाठ्यक्रम समिति की ऑनलाईन/ऑफलाईन बैठक में विश्वविद्यालय परिसर में संचालित एम०ए० हिंदी का पाठ्यक्रम तैयार/संशोधन पारित किए गए।

पाठ्यक्रम समिति द्वारा पारित उक्त पाठ्यक्रम माननीया कुलपति जी एवं विद्वत परिषद् के अनुमोदनार्थ संलग्न प्रेषित हैं।

धन्यवाद,

भवदीय,

9/6/2023

(प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी)
अध्यक्ष, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

नई शिक्षा नीति – 2020

हिंदी पाठ्यक्रम समिति, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

क्र.	नाम	पदनाम	विभाग	कॉलेज/विश्वविद्यालय
1	प्रो॰ नवीन चन्द्र लोहनी (समन्वयक प्रथम)	संकायाध्यक्ष कला एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग	हिंदी	चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
2	डॉ. (श्रीमती) पूनम भारद्वाज (समन्वयक द्वितीय)	एसोसिएट प्रोफेसर	हिंदी	ए॰के॰पी॰ कॉलेज, हापुड़
3	डॉ. स्मिता गर्ग	एसोसिएट प्रोफेसर	हिंदी	डी॰ डी॰ कॉलेज, डिबाई
4	डॉ. (श्रीमती) वंदना शर्मा	एसोसिएट प्रोफेसर	हिंदी	एम॰ एम॰ कॉलेज, मोदीनगर
5	प्रो॰ के॰सी॰ अग्निहोत्री	पूर्व कुलपति एवं आचार्य	हिंदी	एच॰पी॰ केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
6	प्रो॰ जितेन्द्र श्रीवास्तव	आचार्य	हिंदी	इ॰ग॰रा॰मु॰वि॰, नई दिल्ली
7	प्रो॰ सविता मोहन	पूर्व निदेशक	हिंदी	उच्च शिक्षा उत्तराखण्ड, देहरादून
8	प्रो॰ सत्यकेतु	आचार्य एवं अध्यक्ष	हिंदी	अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली
9	डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा अरूण	पूर्व प्राचार्य	हिंदी	रूड़की
10	प्रो॰ बीना शर्मा	निदेशक	हिंदी	केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

हिंदी पाठ्यक्रम समिति द्वारा दिनांक 29 जून 2022 एवं दिनांक 27 मई 2023 को संपन्न बैठक में नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत निम्नांकित पाठ्यक्रम तैयार / संशोधित किए गए।

क्र.	नाम	प्रभावी होने का वर्ष
1	प्री० पीएच० डी० कोर्स वर्क हिंदी	वर्ष 2022–2023 से प्रभावी
2	एम०ए० हिंदी (सी०बी०सी०एस०)	वर्ष 2022–2023 से प्रभावी
3	बी०ए० हिंदी आनर्स (नई शिक्षा नीति एवं सी०बी०सी०एस० प्रणाली के अन्तर्गत नियमित पाठ्यक्रम के रूप में) विश्वविद्यालय परिसर हेतु	वर्ष 2022–2023 से प्रभावी

27.5.23

एम०ए० हिंदी प्रश्नपत्रों के नाम वर्षवार एवं सत्रवार

वर्ष 2023–2024 से प्रभावी

वर्ष	सत्र	पाठ्यक्रम कोड :	अनिवार्य / ऐच्छिक / कौशल संवर्द्धक	प्रश्नपत्र का नाम	(सैद्धांतिकी एवं प्रायोगिकी)	क्रेडिट
1	I	A010701T	अनिवार्य	हिंदी साहित्य का इतिहास	सैद्धांतिकी	5
1	I	A010702T	अनिवार्य	प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य	सैद्धांतिकी	5
1	I	A010703T	अनिवार्य	शोध प्रविधि और प्रक्रिया	सैद्धांतिकी	5
1	I	A010704T	अनिवार्य	प्रयोजनमूलक हिंदी	सैद्धांतिकी	5
1	I	A010705T	अनिवार्य	लघु शोध प्रबन्ध / प्रोजेक्ट कार्य	प्रायोगिकी	4
1	II	A010801T	अनिवार्य	उत्तर मध्यकालीन काव्य	सैद्धांतिकी	5
1	II	A010802T	अनिवार्य	कथा–साहित्य	सैद्धांतिकी	5
1	II	A010803T	अनिवार्य	कथेतर गद्य साहित्य	सैद्धांतिकी	5
1	II	A010804T	अनिवार्य	भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा	सैद्धांतिकी	5
1	II	A010805T	अनिवार्य	लघु शोध प्रबन्ध / प्रोजेक्ट कार्य	प्रायोगिकी	4
2	III		अनिवार्य	आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यंत)	सैद्धांतिकी	5
2	III		अनिवार्य	भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	सैद्धांतिकी	5
2	III		ऐच्छिक (विशिष्ट रचनाकार प्रश्न पत्र में कुल 06 विकल्पों में से किसी एक विकल्प का अध्ययन करना अनिवार्य होगा।)	विशिष्ट रचनाकार विकल्प – (1) कबीरदास	सैद्धांतिकी	5
				(2) सूरदास		
				(3) गोस्वामी तुलसीदास		
				(4) जयशंकर प्रसाद		
				(5) प्रेमचंद		
				(6) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'		
2	III		अनिवार्य	पत्रकारिता प्रशिक्षण	सैद्धांतिकी / प्रायोगिकी	5
2	III		अनिवार्य	लघु शोध प्रबन्ध / प्रोजेक्ट कार्य	प्रायोगिकी	4
2	IV		अनिवार्य	छायावादोत्तर काव्य	सैद्धांतिकी	5
2	IV		अनिवार्य	नाटक और रंगमंच	सैद्धांतिकी	5
2	IV		ऐच्छिक (विशिष्ट साहित्य–धारा प्रश्न पत्र में कुल 05 विकल्पों में से किसी एक विकल्प का अध्ययन करना होगा।)	विशिष्ट साहित्य–धारा विकल्प – (1) भारतीय साहित्य	सैद्धांतिकी	5
				(2) कौरवी लोक साहित्य		
				(3) प्रवासी हिंदी साहित्य		
				(4) (प्राचीन भाषा–साहित्य) संस्कृत		
				(5) (प्राचीन भाषा–साहित्य) प्राकृत–अपभ्रंश		
2	IV		अनिवार्य	हिंदी आलोचना	सैद्धांतिकी	5
2	IV		अनिवार्य	लघु शोध प्रबन्ध / प्रोजेक्ट कार्य	प्रायोगिकी	4
गैर हिंदी स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम सी०बी०सी०एस० विद्यार्थियों हेतु						
1	I	QA010701T	ऐच्छिक	सामान्य हिंदी	सैद्धांतिकी	4
1	II		ऐच्छिक	कोश विज्ञान	सैद्धांतिकी	4
1	III		ऐच्छिक	अनुवाद	सैद्धांतिकी	4

प्रथम वर्ष के एक सत्र में (प्रथम अथवा द्वितीय सत्र) में विद्यार्थी एम०ए० सूक्ष्म ऐच्छिक अन्य संकाय से 4/5/6/ क्रेडिट का विषय पढ़ेंगे। इस प्रकार प्रत्येक सत्र में मुख्य विषय 20 क्रेडिट (5 X 4) तथा प्रायोगिकी/परियोजना कार्य 4 क्रेडिट (कुल 24 क्रेडिट) और प्रथम वर्ष में 04/05/06 क्रेडिट का अन्य संकाय के विषय मिलाकर न्यूनतम 28 क्रेडिट के पाठ्यक्रम पढ़ेंगे।

Sharma 27.5.23

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Compulsory Courses) :– ये विषय के अनिवार्य पाठ्यक्रम हैं। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में सभी विद्यार्थियों को इसका अध्ययन करना है। प्रथम सत्र के सभी पाठ्यक्रम अनिवार्य हैं।

ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Core Elective Courses) :– ऐच्छिक पाठ्यक्रम में कुछ ऐच्छिक पाठ्यक्रम सत्र द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर में पढ़ाए जाएंगे। ये पाठ्यक्रम विद्यार्थी की विषयगत रूचि के अनुरूप ही चयनित होंगे या किए जा सकेंगे।

ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Minor Electives) (अन्य संकाय के विद्यार्थियों के लिए) :– पाठ्यक्रम अन्य संकाय के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित किए गए हैं। अन्य संकायों के जो विद्यार्थी इनका चयन करेंगे वे इनका अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्य संवर्धित ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Value added course) :– किसी अन्य संकाय के विद्यार्थी द्वारा मूल्य संवर्द्धन हेतु यह पाठ्यक्रम लिया जा सकता है। इन पाठ्यक्रमों में जो पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्मित किया गया हो। (न्यूनतम अंक 02 क्रेडिट, 30 घंटे)

स्नातकोत्तर स्तर (एम०ए० हिंदी) पर हिंदी विषय पाठ्यक्रम हेतु सामान्य निर्देश

विद्यार्थी को इण्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

एम०ए० हिंदी पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक सत्र की चार हिंदी विषय संबंधी प्रश्न पत्रों की आंतरिक एवं बाह्य परीक्षाएं क्रमश विश्वविद्यालय नियमानुसार कुल 25 + 75 अंकों की होंगी।

आंतरिक मूल्यांकन सतत् कक्ष शिक्षण के क्रम में सेमेस्टर परीक्षाएँ, संगोष्ठी पत्र लेखन/प्रस्तुतीकरण, क्विज टेस्ट, पुस्तकालय कार्य, गृहकार्य मूल्यांकन के रूप में विश्वविद्यालय नियमानुसार किया जाएगा तथा बाह्य परीक्षा विश्वविद्यालय नियमानुसार संपन्न होंगी।

संबंधित परीक्षाओं में सभी इकाईयों (यूनिट) से अनिवार्यतः प्रश्न पूछे जाएंगे। शिक्षण इकाईयों (यूनिट) के क्रम में ही कराया जाएगा। जिससे आंतरिक परीक्षा के लिए सुविधा रहेगी।

शिक्षण में आधार सामग्री, आलोचनात्मक सामग्री, शोध पत्र–पत्रिकाओं, साहित्यिक एवं आलोचनात्मक पत्रिकाओं के अलावा, इंटरनेट में उपलब्ध जानकारी और शोध सामग्री, यूट्यूब तथा अन्य वेबपोर्टल, मूक एवं इंफ्लिबनेट, शोध गंगा आदि पर उपलब्ध शोध सामग्री तथा शोध जर्नल, संबंधित प्रश्नपत्र में प्रायोगिक अथवा प्रयोगशालाओं पर आधारित अध्ययन भी कराया जाएगा।

प्रश्नपत्र से संबधित शोध पत्रों को अध्ययन में शामिल करना होगा, इसके लिए इस प्रश्न पत्र से संबंधित कम से कम दो शोध पत्रों को छात्र–छात्राओं को संदर्भ के रूप में समझाया जाए तथा अध्ययन सामग्री में शामिल किया जाए।

बाह्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों में पूछे जाने वाले अंक निर्धारण का प्रारूप प्रत्येक पाठ्यक्रम के अंत में दिया गया है। बाह्य परीक्षा के प्रश्न पत्र तदनुरूप रहेंगे। आंतरिक परीक्षाओं में बाह्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों के प्रारूप से विद्यार्थियों का परिचय होना चाहिए।

क्रेडिट संबंधी नियम दिए गए हैं। फिर भी विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित नियमानुसार समय–समय पर इसमें संशोधन किया जा सकता है।

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : प्रथम
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड : A010701T	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिंदी साहित्य का इतिहास**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : एम0 ए0 हिंदी के विद्यार्थियों को हिंदी गद्य तथा हिंदी पद्य का समेकित अध्ययन करना अपेक्षित है। अध्ययन की इस प्रक्रिया में उन्हें हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विविध विचारधाराओं, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, कवियों तथा उनकी रचनाओं की जानकारी आवश्यक है। साथ ही सभी युगों के नामकरण, काल विभाजन के संदर्भ में कौन–कौन से बिन्दुओं को ध्यान में रखा गया तथा किन आधारों पर नामकरण किया गया इसकी जानकारी अपेक्षित है। इसे ध्यान में रखते हुए हिंदी साहित्य के इतिहास के पाठ्यक्रम का स्वरूप निर्धारित किया गया है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. हिंदी साहित्य के ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विभाजन को समझकर उसका विश्लेषण कर सकेंगे। 2. हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण संतों व कवियों की विचारधाराओं को आधुनिक संदर्भों में समझ सकेंगे। 3. विश्व प्रसिद्ध भारतीय साहित्य का चिंतन मनन करने की एक सही दृष्टि प्राप्त होगी। 4. आदिकालीन एवं मध्यकालीन संत कवियों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण से परिचित होंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	हिंदी साहित्येतिहास दर्शन, परंपरा एवं इतिहास, साहित्य की विकासवादी अवधारणा, हिंदी साहित्य के काल विभाजन का आधार, हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा।	10
द्वितीय	आदिकाल की पृष्ठभूमि, आदिकाल का काल निर्धारण और नामकरण, पुरानी हिंदी (परवर्ती अपभ्रंश), सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य, रासो काव्य, स्फुट साहित्य (विद्यापति, अमीर खुसरो, ढोला मारू रा दूहा, अब्दुर्रहमान)	15
तृतीय	भक्तिकाल की पृष्ठभूमि, परिस्थितियाँ, भक्तिकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ, संत काव्यधारा, सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्ति काव्य, राम भक्ति काव्य एवं अन्य महत्वपूर्ण सम्प्रदाय।	15
चतुर्थ	रीतिकालीन कविता की पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिकालीन कविता का स्वरूप (रीतिसिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त), रीति इतर काव्य एवं गद्य साहित्य, रीतिकाल का सामाजिक सांस्कृतिक पक्ष।	15
पंचम	आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि, नवजागरण एवं भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता (वर्ष 2000 तक), नवगीत, आधुनिक विमर्श एवं अन्य गद्य विधाएं, नई कविता के कवि, समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता।	20

निबंधात्मक / आलोचनात्मक प्रश्न	3 X 13	=	39 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	4 X 5	=	20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	11 X 1	=	11 अंक
योग		=	70 अंक

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन / विशिष्ट व्याख्यान / फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग
1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)
अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।
मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन / प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ: हिंदी साहित्य का इतिहास

1 हिंदी साहित्य का सरल इतिहास – विश्वनाथ त्रिपाठी
2 साहित्य और इतिहास दृष्टि – मैनेजर पांडेय
3 साहित्य का इतिहास दर्शन – डॉ० नलिन विलोचन शर्मा
4 हिंदी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
5 हिंदी साहित्य का अतीत (भाग 1, 2) – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
6 हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
7 हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – आचार्य रामकुमार वर्मा
8 हिंदी साहित्य का इतिहास (नवीन संस्करण) – डॉ० नगेंद्र (संपा०)
9 हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (दो खंड) – डॉ० गणपति चंद्र गुप्त
10 रासो विमर्श – माता प्रसाद गुप्त
11 हिंदी साहित्य का इतिहास – विजयेंद्र स्नातक
12 हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास (खंड 1, 2) – राम प्रसाद मिश्र
13 हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ० बच्चन सिंह
14 हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी
15 आधुनिक हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ० बच्चन सिंह
16 आधुनिक हिंदी कविता – डॉ० हरदयाल
17 दक्खिनी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ० इकबाल सिंह
18 हिंदी साहित्य की विश्वयात्रा – सुरेश ऋतुपर्ण (संपा०)
19 हिंदी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
20 हिंदी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ – डॉ० अवधेश प्रधान
21 भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ – रामविलास शर्मा
22 आधुनिकता और हिंदी साहित्य – इंद्रनाथ मदान
23 आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ० बच्चन सिंह
24 हिंदी नवजागरण और संस्कृति – शंभुनाथ
25 हिंदी वाङ्मय बीसवीं शती – डॉ० नगेंद्र (संपा०)
26 स्वातंत्र्योतर हिंदी साहित्य – बेचन
27 हिंदी साहित्य का अतीत (भाग–1 व 2) – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
28 बीसवी शताब्दी का हिंदी साहित्य – विजय मोहन सिंह
29 भारतीय साहित्य की भूमिका – रामविलास शर्मा
30 आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ० नामवर सिंह
31 छायावाद – डॉ० नामवर सिंह
32 हिंदी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास (तीन भाग) – कुसुम राय
33 हिंदी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय
34 हिंदी गद्य साहित्य – डॉ० राम चंद्र तिवारी

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : प्रथम
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड : A010702T	पाठ्यक्रम शीर्षक : **प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : हिंदी के आदिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि में अपभ्रंश का बड़ा योगदान है। आदिकालीन काव्य, प्रबंध, मुक्तक आदि अनेक काव्य रूपों में रचा गया है तथा इसकी अभिव्यंजना अपभ्रंश, अवहट्ठ तथा देशी भाषा में की गई है। परवर्ती काल के साहित्य का अध्ययन किए बिना इस काल के साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। पूर्व मध्यकालीन (भक्तिकालीन) साहित्य लोक–जागरण और लोक–मंगल से परिपूरित था। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परम्परा को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। उस समय के साहित्य में भाषा तथा कला के सौन्दर्य को परखने तथा समाज और संस्कृति को जानने के लिए आदिकालीन व भक्तिकालीन कविता का अध्ययन आवश्यक है। (इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा की जानी अपेक्षित है।)

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण कालखण्ड प्रारम्भिक काल एवं भक्तिकाल के प्रमुख कवियों की कालजयी रचनाओं से विद्यार्थी जीवन–दृष्टि को समझ सकेंगे। 2. समाज में लोक मंगल एवं सामाजिक समरसता की चिंतन पद्धति भक्ति काल के कवियों में किस रूप में परिलक्षित होती है, यह भी ज्ञान इस पाठ्यक्रम में हो सकेगा।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	पृथ्वीराज रासो – रेवा तट, संपादकः हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं नामवर सिंह।	10
द्वितीय	कबीर ग्रंथावली – कबीर, संपादक, डॉ० श्यामसुंदर दास–50 साखियाँ (प्रारंभिक) पद्मावत – मलिक मुहम्मद जायसी, संपादक–आचार्य रामचंद्र शुक्ल नागमति वियोग खंड।	20
तृतीय	सूरदास – भ्रमरगीत सार – संपादक – आचार्य रामचंद्र शुक्ल पद संख्या 21 से 70 तक।	20
चतुर्थ	तुलसीदास : रामचरितमानस, गीता प्रेस (उत्तरकांड के दोहा सं० 40 तक)	15
पंचम	द्रुतपाठ :– विद्यापति, अमीर खुसरो, नानक, गोरखनाथ, सहजोबाई, रैदास, नंददास, नामदेव।	10

व्याख्या	–	2 X 7.50	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	2 X 15	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	3 X 5	= 15 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	= 10 अंक
योग			= 70 अंक

नोट 1 :– व्याख्याएं चंदबरदायी, कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास के चयनित काव्य में से पूछी जाएगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।
2 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम

100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।
3 :– द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित सामान्य प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ: प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य

1	चंदबरदायी और उनका काव्य	– डॉ0 विपिन बिहारी त्रिवेदी
2	पृथ्वीराज रासो का अध्ययन	– डॉ0 विजय कुलश्रेष्ठ
3	पृथ्वीराज रासो की भाषा	– डॉ0 नामवर सिंह
4	कबीर	– हजारी प्रसाद द्विवेदी
5	कबीर : एक नई दृष्टि	– डॉ0 रघुवंश
6	कबीर का रहस्यवाद	– डॉ0 रामकुमार वर्मा
7	कबीर का रहस्यवाद	– आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
8	जायसी ग्रंथावली	– आचार्य रामचंद्र शुक्ल (भूमिका भाग) (संपा0)
9	जायसी	– विजय देव नारायण साही
10	पद्मावत में लोक तत्व	– डॉ0 रवींद्र भ्रमर
11	सूर और उनका साहित्य	– डॉ0 हरवंशलाल शर्मा
12	सूर की काव्य कला	– मनमोहन गौतम
13	भ्रमरगीत सार (भूमिका भाग)	– आचार्य रामचंद्र शुक्ल
14	सूर की सांस्कृतिक चेतना और उनका युगबोध	– डॉ0 संतराम वैश्य
15	तुलसीदास	– आचार्य रामचंद्र शुक्ल
16	गोसाईं तुलसीदास	– आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
17	तुलसीदास और उनका युग	– डॉ0 राजपत दीक्षित
18	तुलसी काव्य मीमांसा	– डॉ0 उदय भानु सिंह
19	दोहा कोश	– राहुल सांकृत्यायन
20	सिद्ध साहित्य	– डॉ0 धर्मवीर भारती
21	सरहपा और कबीर	– कौशलेंद्र पांडे
22	विद्यापति	– डॉ0 शिवप्रसाद सिंह
23	विद्यापति	– डॉ0 आनंद प्रकाश दीक्षित
24	विद्यापति	– प्रो0 जनार्दन मिश्र
25	नंददास : जीवन और काव्य	– भवानी दत्त उप्रेती
26	नंददास उनका जीवन और काव्य	– सावित्री अवस्थी
27	युग प्रवर्तक संत गुरू रविदास	– पृथ्वी सिंह आजाद
28	संत रैदास : कृतित्व, जीवन और विचार	– योगेंद्र सिंह

29	रहीम और उनका काव्य	– डॉ० देशराज सिंह भाटी
30	हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि	– डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना
31	हिंदी संत काव्यों में परंपरा और प्रयोग	– डॉ० भगवान देव पांडेय
32	संतो राह दुऔ हम दीठा	– डॉ० भगवान देव पांडेय (संपा०)
33	आदिकालीन हिंदी साहित्य शोध	– हरीश
34	कबीर एक अनुशीलन	– डॉ० रामकुमार वर्मा
35	महाकवि तुलसीदास और युग संदर्भ	– भगीरथ मिश्र
36	कबीर	– विजयेंद्र स्नातक
37	अमीर खुसरो का हिंदी काव्य	– गोपीचंद नारंग
38	संत रैदास	– पद्मावती झुनझुनवाला
39	मीरा ग्रंथावली	– विद्या निवास मिश्र, गोविंद रजनीश (संपा०)
40	तुलसी संदर्भ	– डॉ० नगेंद्र
41	भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य	– प्रो० मैनेजर पांडेय
42	तुलसी आधुनिक वातायन से	– रमेश कुंतल 'मेघ'
43	लोकवादी तुलसी	– विश्वनाथ त्रिपाठी

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : प्रथम
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड : A010703T	पाठ्यक्रम शीर्षक : **शोध–प्रविधि और प्रक्रिया**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : शोध प्रविधि के माध्यम से विद्यार्थियों को शोध करने हेतु प्रेरणा मिलेगी। साथ ही उन्हें शोध की विभिन्न प्रक्रियाओं की जानकारी मिल सकेगी। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को शोध विषय को समझाने का प्रयास हुआ है। शोध द्वारा जीवन में नवोन्मेष संभव हो सकेगा।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. विद्यार्थी की विचारात्मक, विश्लेषणात्मक चिंतन प्रणाली शोध के आधार पर विकसित होगी। 2. शोध के नवीन संदर्भों के साथ हिंदी और तकनीक की जानकारी प्राप्त होगी। 3. शोध के विभिन्न क्षेत्रों में शोध की बढ़ती संभावनाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	**शोध का स्वरूप : सैद्धांतिक पक्ष** क. शोध : व्युत्पत्ति, परिभाषा और स्वरूप ख. शोध : तत्व, क्षेत्र, दृष्टि ग. शोध के प्रयोजन घ. शोध और आलोचना	15
द्वितीय	**शोध के प्रकार** 1. साहित्यिक शोध : प्रकार, क्षेत्र एवं अवधारण 2 साहित्यिक शोध लेखन की प्रविधि 3. अन्तरविद्यावर्ती शोध (मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय) अवधारणा एवं स्वरूप 4. पाठालोचन 5. लोक साहित्यिक शोध 6. तुलनात्मक शोध	15
तृतीय	**विषय चयन तथा शोध–प्रविधि** क. विषय चयन ख. शोध क्षेत्र तथा शोध दृष्टि के आधार पर विषयों के प्रकार ग. रूपरेखा निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति घ. सामग्री संकलन की विभिन्न पद्धतियाँ	15
चतुर्थ	**संकलित सामग्री की उपयोग विधि** क. सामग्री का विभाजन (अध्याय, उपशीर्षक और अनुपात) ख. सामग्री संयोजन ग. उद्धरण तथा संदर्भोल्लेख घ. भूमिका, उपसंहार लेखन एवं परिशिष्ट	15
पंचम	**हिंदी कंप्यूटिंग** • कंप्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब–पब्लिशिंग का परिचय। • इण्टरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव • वेब–पब्लिशिंग। • इण्टरनेट एक्सप्लोरर अथवा नेटस्केप। • लिंक, ब्राउजिंग, ई–मेल। • डिजीटल तकनीक	15

आवश्यक निर्देश :– परीक्षार्थी को उक्त पाँच खण्डों में से कुल पाँच प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न करना अनिवार्य होगा। प्रत्येक खण्ड में से कम से कम दो प्रश्न पूछे जाएंगे। अधिकतम दस प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

निबंधात्मक प्रश्न	3 X 13	=	39 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	4 X 5	=	20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	11 X 1	=	11 अंक
योग		=	70 अंक

नोट 1 :– इकाई 01, 02 एवं 05 से निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई 03 एवं 04 से व्याख्या एवं निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

2 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : <u>शोध–प्रविधि और प्रक्रिया</u>

1 अनुसंधान प्रविधि – डॉ० एस०एन० राय
2 अनुसंधान की प्रविधि एवं प्रक्रिया – डॉ० राजेन्द्र मिश्र
3 साहित्य अनुशीलन : विभिन्न दृष्टियाँ – डॉ० दया शंकर शुक्ल
4 रामकाव्य धारा : अनुसंधान एवं अनुचिन्तक – भगवती प्रसाद सिंह
5 पाठ सम्पादन के सिद्धान्त – डॉ० कन्हैया सिंह
6 हिंदी पाठानुसंधान – डॉ० कन्हैया सिंह
7 अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया – डॉ० मुध खराटे/डॉ० शिवाजी देवरे

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : प्रथम
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड : A010704T	पाठ्यक्रम शीर्षक : **प्रयोजनमूलक हिंदी**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : आज हिंदी का प्रयोग साहित्य, सृजनात्मक लेखन के साथ–साथ कार्यालय, पत्रकारिता, कम्प्यूटर तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी अधिकाधिक हो रहा है। कार्यालयी हिंदी की संरचना साहित्यिक हिंदी तथा सृजनात्मक हिंदी से अलग है। इसी तरह इन्टरनेट तथा अनुवाद में हिंदी का स्वरूप अलग है। हिंदी के इन विविध रूपों का अध्ययन करना हिंदी के आधुनिक स्वरूप को जानने, समझने के लिए आवश्यक है। इस प्रक्रिया में कार्यालयी हिंदी के औपचारिक लेखन के स्वरूप का अध्ययन अपेक्षित है, साथ ही, अनुवाद के विविध रूप, प्रक्रिया एवं प्रविधि तथा उनके क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. विद्यार्थी हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप तथा उसके कार्यालयी प्रयोग की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। 2. जनसंचार माध्यमों में हिंदी लेखन के स्वरूप से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे। 3. कम्प्यूटर में हिंदी के बढ़ते प्रयोग एवं उपयोगिता को समझ सकेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	**कामकाजी हिंदी** : हिंदी के विभिन्न रूप–सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, संपर्क भाषा, मातृभाषा, कार्यालयी हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, टिप्पण, संक्षेपण, पल्लवन।	15
द्वितीय	जनसंचार माध्यमों में हिंदी-लेखन, रिपोर्ट–लेखन, संपादकीय, अग्रलेख, लघु टिप्पणियाँ।	15
तृतीय	फीचर लेखन, विविध दैनिकों, रेडियो चैनलों, इंटरनेट, मोबाइल, फिल्मों, टीवी चैनलों में प्रयुक्त हिंदी का स्वरूप, जनसंपर्क एवं विज्ञापनों में हिंदी।	15
चतुर्थ	**हिंदी कंप्यूटिंग** : 1. कंप्यूटर– (परिचय, उपयोगिता, संचालन) 2. संचालन तंत्र– (परिचय, विंडोज़, मैक और लिनक्स) 3. ऑफ़िस अनुप्रयोग (परिचय, माइक्रोसॉफ़्ट वर्ड, एक्सेल तथा पावर पांइट) 4. इंटरनेट– (परिचय, प्रयोग, उपकरण, ब्राउज़िगं) 5. वेब पब्लिशिंग और मल्टीमीडिया– (परिचय, साधन, सोशल मीडिया) 6. कम्प्यूटर में हिंदी – (यूनिकोड, हिंदी कीबोर्ड, हिंदी फॉन्ट, अन्य सुविधाएँ) 7. संचार प्रौद्योगिकी और मोबाइल फोन (परिचय, हिंदी का प्रयोग, उपयोगी एप्स (अनुप्रयोग), चुनौतियाँ)	15
पंचम	**अनुवाद** : अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि, कार्यालयी वैज्ञानिक–तकनीकी परिभाषिक शब्दावली हिंदी और अनुवाद, लिप्यंतरण। अनुवाद के अन्य क्षेत्रः वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, विधि, साहित्य, कार्यालयी।	15

निबंधात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	3 X 13	=	39 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	4 X 5	=	20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	11 X 1	=	11 अंक
योग		=	70 अंक

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता :–इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : प्रयोजनमूलक हिंदी

1 प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे
2 प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग – दंगल झाल्टे
3 टिप्पणी प्रारूप – शिवनारायण चतुर्वेदी
4 प्रालेखन प्रारूप – शिवनारायाण चतुर्वेदी
5 राजभाषा विविधा – माणिक मृगेश
6 व्यावसायिक हिंदी – रहमतुल्लाह
7 पत्र–व्यवहार निर्देशिका – भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ
8 प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन – भोलानाथ तिवारी
9 व्यावहारिक हिंदी और स्वरूप – कृष्ण कुमार गोस्वामी
10 प्रयोजनमूलक हिंदी – (संपा0) कृष्ण कुमार गोस्वामी
11 अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा – सुरेश कुमार
12 भाषा और प्रौद्योगिकी – (संपा0) गिरिराज किशोर
13 व्यावसायिक हिंदी – डॉ0 प्रेमचंद पातंजलि
14 संप्रेषण एवं बैंकिंग व्यवस्था – डॉ0 सुभाष गौड़
15 अनुवाद प्रक्रिया – डॉ0 रीता रानी पालीवाल
16 व्यावहारिक हिंदी – कैलाशचंद्र भाटिया
17 बैंकों में प्रयोजनशील हिंदी – अनिल कुमार तिवारी
18 व्यावसायिक हिंदी – डॉ0 ओम प्रकाश सिंहल
19 साधारण बीमा व्यवसाय में हिंदी का प्रयोग – श्रीराम मुंढे
20 कंप्यूटर और हिंदी – डॉ0 हरिमोहन
21 कार्यालय कार्यबोध – हरिबाबू कंसल
22 व्यावहारिक हिंदी – डॉ0 लक्ष्मीकांत पांडेय
23 संक्षेपण और विस्तारण – कैलाशचंद्र भाटिया
24 प्रयोजनमूलक हिंदी – रघुनंदन प्रसाद शर्मा
25 प्रयोजनमूलक हिंदी : संरचना एवं अनुप्रयोग – डॉ0 रामप्रकाश/डॉ0 दिनेश गुप्त
26 प्रशासनिक हिंदी – डॉ0 ओम प्रकाश
27 प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी – डॉ ओम प्रकाश सिंहल

28	अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं	– भोलानाथ तिवारी/ओमप्रकाश गाबा
29	राजभाषा हिंदी	– डॉ0 कैलाशचंद्र भाटिया
30	सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग	– गोपीनाथ श्रीवास्तव
31	प्रशासनिक कार्यालय की हिंदी	– डॉ0 रामप्रकाश/डॉ0 दिनेश कुमार गुप्त
32	व्यावहारिक हिंदी	– डॉ0 रवींद्रनाथ/डॉ0 भोलानाथ तिवारी
33	व्यावहारिक हिंदी पत्राचार	– डॉ0 दंगल झाल्टे
34	प्रयोजनमूलक हिंदी	– कमल कुमार बोस
35	हिंदी की मानक वर्तनी	– कैलाश चंद्र भाटिया/रचना भाटिया
36	हिंदी कार्मिकी	– डॉ0 शंकर शेष, डॉ0 कंचन शर्मा
37	भाषा और प्रौद्योगिकी	– विनोद कुमार प्रसाद
38	नई पत्रकारिता और समाचार लेखन	– सविता चड्ढा
39	पत्रकारिता के सिद्धांत	– रमेश चंद्र त्रिपाठी
40	समाचार माध्यम : संगठन एवं प्रबंध	– संजीव भानावत
41	प्रशासनिक हिंदी : टिप्पण प्रारूपण एवं पत्र लेखन	– डॉ0 हरिमोहन
42	हिंदी पत्रकारिता : दशा और दिशा	– डॉ0 कैलाश नारद
43	आधुनिक जनसंचार और हिंदी	– डॉ0 हरिमोहन
44	राजभाषा हिंदी	– डॉ0 कैलाश चंद्र भाटिया
45	नई पत्रकारिता और समाचार लेखन	– सविता चड्ढा
46	आधुनिक जनसंचार और हिंदी	– डॉ0 हरिमोहन
47	इलैक्ट्रॉनिक मीडिया	– टी0डी0एस0 आलोक
48	प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी	– कैलाश चंद्र भाटिया
49	रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता	– डॉ0 हरिमोहन
50	जनसंचार माध्यमों में हिंदी	– चंद्र कुमार
51	संचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य	– जवरीमल्ल पारख
52	कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग	– विजय कुमार मल्होत्रा
53	संपादन कला	– (संपा0) के0 सी0 नारायण
54	अनुवाद कला	– डॉ0 एन0ई0 विश्वनाथ अय्यर
55	आधुनिक विज्ञापन	– प्रेमचंद पातंजलि
56	संपादन कला एवं प्रूफ पठन	– डॉ0 हरिमोहन
57	आधुनिक जनसंचार और हिंदी	– डॉ0 हरिमोहन
58	भारतीय प्रसारण माध्यम	– डॉ0 कृष्ण कुमार रत्तू

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : द्वितीय
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड : A010801T	पाठ्यक्रम शीर्षक : <u>उत्तर मध्यकालीन काव्य</u>	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : जीवन के इहलौकिक पक्ष का संज्ञान भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारलौकिकता का द्वार यहीं से खुलता है। चार पुरुषार्थ में काम का एक स्तम्भ होना गहरे अर्थ की व्यंजना करता है। जैसे काम और कला घनीभूत भाव से जुड़े हैं, वैसे ही रति और रीति भी। जहाँ 'रति' मानव हृदय की मूल प्रवृत्ति है, वहीं 'रीति' उसे मनोवांछित अभिव्यंजना देती है। हिंदी साहित्य का रीतिकाल इन्हीं मनोवृत्तियों से जुड़ा हुआ है। तद्युगीन परिस्थितियों के कारण प्रेम के श्रृंगारिक रूप की संपृक्ति बढ़ी। रसिकता और शास्त्रीयता का सुखद संयोग घटित हुआ। जीवन के मधुर पक्ष को भी ठीक से समझने के लिए रीति अथवा श्रृंगारकाल का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। (इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. रीतिकालीन कविता में अभिव्यक्त तत्कालीन समाज और संस्कृति से परिचित हो सकेंगे। 2. रीतिकाल के विविध काव्यधाराओं के महत्वपूर्ण कवियों के काव्य पक्ष की जानकारी कर पाएंगे। 3. रीतिकाल में सृजित काव्यांग निरूपण की परंपरा का ज्ञान कर सकेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय		कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	(बिहारी रत्नाकर, संपा0 जगन्नाथ दास रत्नाकर) बिहारी	दोहा संख्या 01 से 50 तक	20
द्वितीय	(घनानंद कवित्त, संपा0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) घनानंद	कविता संख्या 01 से 30 तक	15
तृतीय	(मीराबाई) विश्वनाथ त्रिपाठी	पद संख्या 01 से 20 तक	15
चतुर्थ	(भूषण ग्रंथावली, संपा0 आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) भूषण	छंद संख्या 01 से 15 तक	15
पंचम	**द्रुतपाठ** : रहीम, चिन्तामणि, देव, सेनापति, पद्माकर, मतिराम, गुरू गोविंद सिंह।		10

व्याख्या	–	2 X 7.50	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	2 X 15	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	3 X 5	= 15 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	= 10 अंक
योग			= 70 अंक

<u>नोट 1</u> :– व्याख्याएँ बिहारी, घनानंद, मीरा एवं भूषण के चयनित काव्य में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।

2 लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

3 द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : उत्तर मध्यकालीन काव्य

1 संक्षिप्त भूषण – भगवान दास तिवारी
2 हिंदी रीति साहित्य – भगीरथ मिश्र
3 मध्यकालीन हिंदी मुक्तक : उद्‌भव और विकास – जितेंद्रनाथ पाठक
4 देव के काव्य में अभिव्यक्ति विधान एवं समस्त संदर्भ ग्रंथ – राज बुद्धिराजा
5 रीति साहित्य की भूमिका – डॉ0 नगेंद्र
6 बिहारी रत्नाकर – जगन्नाथ दास रत्नाकर (संपा०)
7 घनानंद कवित्त – विश्वनाथ प्रताप मिश्र (संपा०)
8 रामचंद्रिका – केशवदास
9 मतिराम ग्रंथावली – मतिराम
10 शिवा बावनी – भूषण
11 बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ प्रताप मिश्र
12 बिहारी : नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह
13 मीरा का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी
14 घनानंद : काव्य और आलोचना – किशोरी लाल
15 केशव का आचार्यत्व – डॉ0 विजयपाल सिंह
16 आचार्य केशवदास – हीरालाल दीक्षित
17 बिहारी का नया मूल्यांकन – डॉ0 बच्चन सिंह
18 घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – डॉ0 मनोहरलाल गौड़
19 रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना – डॉ0 बच्चन सिंह
20 पद्‌माकर – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
21 महाकवि मतिराम – डॉ0 त्रिभुवन सिंह
22 रीतिकालीन काव्य सिद्धांत – डॉ0 सूर्यनारायण द्विवेदी
23 हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
24 रसखान रचनावली : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – विद्यानिवास मिश्र (संपा0)
25 पद्‌माकर कवि – शुकदेव दुबे
26 देव के काव्य में अभिव्यक्ति विधान – राज बुद्धिराजा
27 भक्ति काव्य : स्वरूप और संवेदना – डॉ0 रामनारायण शुक्ल
28 घनानंद का काव्य – डॉ0 रामदेव शुक्ल

29	रसखान काव्य और आलोचना	– ब्रजभूषण सावलिया
30	बिहारी अनुशीलन	– डॉ0 सरोज गुप्ता
31	पद्माकर की काव्यभाषा का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन	– डॉ0 ओंकार नाथ द्विवेदी
32	रीतिमुक्त कवियों का सौदर्यशास्त्रीय अध्ययन	– डॉ0 लक्ष्मण प्रसाद शर्मा
33	सामंती परिवेश और बिहारी का काव्य	– रामदेव शुक्ल
34	भूषण	– भूषण ग्रंथावली (संपा० डॉ० भगीरथ दीक्षित)

कार्यक्रम/कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : द्वितीय
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड : A010802T	पाठ्यक्रम शीर्षक : **कथा–साहित्य**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : हिंदी गद्य की विधाओं में कहानी एवं उपन्यास सर्वाधिक विकसित तथा लोकप्रिय हैं। सम्प्रति उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है, अतः इस विधा का विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है। (इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. साहित्य में कहानी और उपन्यास मानव चरित्र का चित्र मात्र होते हैं। कथ्य की व्यापकता एवं सामाजिकता का समावेश उपन्यासों और कहानियों को समाज से जोड़ते हैं। अतः विद्यार्थी इस प्रश्न पत्र का अध्ययन कर सामाजिक संदर्भों को ठीक से समझ सकेंगे। 2. हिंदी कथा सहित्य में समसामायिक विमर्शों एवं विचारधाराओं से विद्यार्थी परिचित होंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान/ट्यूटोरियल/– (साप्ताहिक घंटे) व्या०/ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	उपन्यास एवं कहानी का इतिहास, स्वरूप, प्रमुख आंदोलन।	10
द्वितीय	1. गोदान – प्रेमचंद 2. मैला आंचल – फणीश्वर नाथ 'रेणु'	15
तृतीय	1. बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद 'द्विवेदी' 2. शेखर : एक जीवनी (भाग एक) – अज्ञेय	20
चतुर्थ	**हिंदी कहानी** :– चंद्रधर शर्मा गुलेरी (उसने कहा था), जयशंकर प्रसाद (आकाशदीप), निर्मल वर्मा (परिंदे), ओमप्रकाश वाल्मीकि (सलाम), कृष्णा सोबती (सिक्का बदल गया), जैनेन्द्र (अपना अपना भाग्य), फणीश्वर नाथ रेणु (तीसरी कसम), राजेन्द्र यादव (जहाँ लक्ष्मी कैद है)।	20
पंचम	**द्रुतपाठ** :– शैलेश मटियानी, दूधनाथ सिंह, मैत्रेयी पुष्पा, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, गंगा प्रसाद विमल। द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।	10

निबंधात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	3 X 13	=	39 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	4 X 5	=	20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	11 X 1	=	11 अंक
योग		=	70 अंक

नोट 01 :– व्याख्याएँ इकाई संख्या 02, 03 एवं 04 से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01, 02, 03 एवं 04 से पूछे जाएंगे।

02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन / विशिष्ट व्याख्यान / फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन / प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : कथा–साहित्य

1.	गोदान	– प्रेमचंद
2.	मैला आंचल	– फणीश्वर नाथ 'रेणु'
3.	बाणभट्ट की आत्मकथा	– हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'
5.	राग दरबारी	– श्रीलाल शुक्ल
6.	आँवा	– चित्रा मुद्गल
7.	बूँद और समुंद्र	– अमृतलाल नागर
8.	उसने कहा था	– चंद्रधर शर्मा गुलेरी
9.	पुरस्कार	– जयशंकर प्रसाद
10.	कफन	– प्रेमचंद
11.	पत्नी	– जैनेंद्र
12.	परिंदे	– निर्मल वर्मा
13.	वापसी	– उषा प्रियंवदा
14.	कथाकार प्रेमचंद	– मन्मथनाथ गुप्त
15.	प्रेमचंद	– डॉ0 सत्येंद्र
16.	प्रेमचंद	– (संपादक) सुरेश चंद्र त्यागी
17.	गोदान (पुनर्मूल्यांकन)	– गोपाल राय
18.	हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा	– डॉ0 रामदरश मिश्र
19.	हिंदी उपन्यास : समकालीन विमर्श	– डॉ0 सत्यदेव त्रिपाठी
20.	राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी उपन्यास	– डॉ0 तेज सिंह
21.	भारतीय स्वतंत्रता और हिंदी उपन्यास	– डॉ0 शशि भूषण सिंघल
22.	हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों का नवमूल्यांकन	– डॉ0 उदयवीर शर्मा
23.	उपन्यासों का उदय	– डॉ0 धर्मपाल सरीन
24.	मूल्य और हिंदी उपन्यास	– डॉ0 हेमराज कौशिक
25.	उपन्यास : स्वरूप और संवेदना	– राजेंद्र यादव
26.	गोदान	– राजेश्वर गुप्ता
27.	हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ	– डॉ0 शशि भूषण सिंघल
28.	रागदरबारी : कृति से साक्षात्कार	– डॉ0 चंद्र प्रकाश मिश्र
29.	रागदरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन	– डॉ0 राधा दीक्षित
30.	उपन्यास : स्थिति और गति	– चंद्रकांत बांदिवडेकर
31.	हिंदी उपन्यास का इतिहास	– गोपाल राय
32.	हिंदी उपन्यास	– डॉ0 शिवनारायण श्रीवास्तव
33.	कहानी : नई कहानी	– डॉ0 नामवर सिंह

34.	नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति	– देवीशंकर अवस्थी (संपा0)
35.	कहानी आंदोलन की भूमिका	– डॉ0 बलराज पांडेय
36.	प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में प्रगतिशीलता	– निर्मल कुमारी वार्ष्णेय
37.	गोदान : नया परिप्रेक्ष्य	– डॉ0 गोपाल राय
38.	हिंदी उपन्यास : पहचान और परख	– इंद्रनाथ मदान (संपा0)
39.	आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य मूल्यों से प्रयाण	– शकुंतला सिन्हा
40.	गोदान : आलोचना और आलोचना	– डॉ0 इंद्रनाथ मदान
41.	आज की कहानी	– विजयमोहन सिंह
42.	कहानी : स्वरुप और संवेदना	– राजेंद्र यादव
43.	हिंदी उपन्यास : 1950 के बाद	– नित्यानंद तिवारी
44.	उपन्यास स्थिति और गति	– डॉ0 चंद्रकांत वांदिवडेकर
45.	आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना	– डॉ0 चंद्रकांत वांदिवडेकर
46.	कहानी पाठ और प्रक्रिया	– सुरेंद्र चौधरी
47	आधुनिक हिंदी उपन्यास	– सं० भीष्म सहानी / डॉ० रामजी मिश्र
48	आधुनिकता और हिंदी उपन्यास	– इंद्रनाथ मदान
49	आधुनिकता एवं सृजनात्मक साहित्य	– इंद्रनाथ मदान
50	इक्कीसवी सदी का हिंदी उपन्यास	– पुष्पपाल सिंह
51	आलोचनात्मक यथार्थवाद और प्रेमचंद	– प्रो० सत्यकाम

कार्यक्रम/कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : द्वितीय
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड : A010803T	पाठ्यक्रम शीर्षक : **कथेतर गद्य साहित्य**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : हिंदी साहित्य की विधाओं में कथा साहित्य एवं नाट्य के अतिरिक्त सृजनधर्मी रचनाकारों द्वारा लिखित अन्य विधाओं का अध्ययन भी अपेक्षित है। यह प्रश्नपत्र इसी कमी को पूरा करता है जिसके माध्यम से साहित्य की कई नवीन विधाओं का अध्ययन होगा। (इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. विद्यार्थी इस पत्र में गद्य विधाओं नाटक, निबंध, संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी में वर्णित लेखकों के अनुभवों से साक्षात् जुड़ सकेंगे। 2. नाटक में नाटक की परिकल्पना समाज में नायकत्व की संकल्पना की परिपुष्ट करती है। अतः विद्यार्थी जीवन जगत का अनुभव हासिल कर सकेंगे। 3. हिंदी गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण गद्य विद्याओं के रचनाकर्म से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान/ट्यूटोरियल/– (साप्ताहिक घंटे) व्या०/ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	**निबंध :** कविता क्या है ? – आचार्य रामचंद्र शुक्ल **संस्मरण** : सुधियाँ उस चन्दन के वन की – विष्णुकांत शास्त्री (महादेवी वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, नामवर सिंह) **रिर्पोताज** : ऋणजल धनजल – फणीश्वरनाथ रेणु **डायरी** : अकेला मेला – रमेशचन्द्र शाह **साक्षात्कार** : प्रेमचन्द के साथ दो दिन – बनारसीदास चतुर्वेदी	20
द्वितीय	**व्यंग्य :** इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर – हरिशंकर परसाई **आत्मकथा :** अपनी खबर – पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र **रेखाचित्र :** ठकुरी बाबा – महादेवी वर्मा	15
तृतीय	**जीवनी :** आवारा मसीहा – विष्णु प्रभाकर	15
चतुर्थ	**यात्रा वृतांत :** घुमक्कड़ शास्त्र – राहुल सांकृत्यायन	15
पंचम	**द्रुतपाठ** : प्रताप नारायण मिश्र, सरदार पूर्ण सिंह, बालमुकुन्द गुप्त, रामवृक्ष बेनीपुरी, जयप्रकाश कर्दम, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, सुशीला टाकभौरे।	10

व्याख्या	–	2 X 7.5	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	2 X 15	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	3 X 5	= 15 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	= 10 अंक
योग			= 70 अंक

नोट 01 :– व्याख्याएँ इकाई संख्या 01 से 04 तक में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त रचनाकारों पर आधारित होंगे।

02 लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।
03 द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : कथेतर गद्य साहित्य

1	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	– (संपादक) डॉ0 सुरेश चंद त्यागी
2	मेरे प्रिय निबंध	– डॉ0 नगेंद्र
3	साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ	– डॉ0 कैलाश चंद भाटिया
4	प्रतिनिधि हिंदी निबंधकार	– डॉ0 हरिमोहन
5	निबंधकार हजारी प्रसाद द्विवेदी	– उषा सिंघल
6	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की साहित्य साधना	– ओम प्रकाश नायर
7	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के निबंध	– डॉ0 के0सी0 गुप्त
8	आधुनिक निबंध साहित्य में मनोवैज्ञानिक उद्भावनाएं	– डॉ0 (श्रीमती) प्रेम सिंह
9	व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की सामाजिक प्रतिबद्धता	– संजय शर्मा
10	राहुल सांकृत्यायन	– डॉ0 कन्हैयालाल सिंह
11	महापंडित राहुल सांकृत्यायन	– गुणाकर मुले
12	राहुल सांकृत्यायन और प्रगतिशील साहित्य	– डॉ0 कैलाश देवी सिंह
13	निर्मल वर्मा की कहानियों का विदेशी परिवेश	– डॉ0 सरिता वशिष्ठ
14	सर्जना साहित्यिक निबंध	– डॉ0 पीतांबर सरोदे
15	हिंदी गद्य विन्यास और विकास	– रामस्वरूप चतुर्वेदी
16	राहुल का भारत	– विष्णु चंद्र शर्मा
17	हिंदी का गद्य साहित्य	– रामचंद्र तिवारी
18	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	– रामचंद्र तिवारी
19	साहित्य और समय	– डॉ0 अवधेश प्रधान
20	हजारी प्रसाद द्विवेदी	– विश्वनाथ त्रिपाठी (संपा0)
21	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	– गणपति चंद्र गुप्त (संपा0)
22	हिंदी व्यंग्य का इतिहास	– सुभाष चंदर
23	हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास	– बच्चन सिंह
24	आधुनिक निबंध	– कमल शर्मा
25	हिंदी गद्य के आयाम	– डॉ0 वेंकट शर्मा
26	आधुनिक हिंदी निबंध	– डॉ0 राजेंद्र प्रसाद मिश्र/डॉ0 मनोज मिश्र
27	अतीत के चलचित्र	– महादेवी वर्मा
28	हिंदी गद्य मीमांसा	– रमाकांत त्रिपाठी
29	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं	– रवींद्रनाथ त्यागी
30	मेरी तिब्बत यात्रा	– राहुल सांकृत्यायन

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : द्वितीय
	विषय : हिंदी	
पाठ्यक्रम कोड : A010804T	पाठ्यक्रम शीर्षक : **भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मिति है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषा विज्ञान, भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाईयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतरसंबंधों के विन्यास को अलौकिकता प्रदान कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देता है अपितु भाषा–विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चात्य साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्वपूर्ण है। भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिंदी अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. भाषा वैज्ञानिक अध्ययन द्वारा विद्यार्थी भाषा का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति से करना सीखेंगे। 2. विश्व की तमाम भाषाओं की उत्पत्ति संबंधी अवधारणाओं और मान्यताओं को समझ सकेंगे। 3. विश्व की तमाम भाषाओं के आपसी संबंध को समझ सकेंगे। 4. भाषा में होने वाले परिवर्तनों को रेखांकित कर पाएंगे। 5. भाषाई रूपों को समझ सकेंगे। 6. मानवीय विकास और भाषा के संबंध को समझेंगे। 7. भाषा और लिपि के आपसी संबंध को समझेंगे। 8. भाषा का इतिहास, संस्कृति और व्यवहार से संबंध को समझ सकेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	**भाषा और भाषा विज्ञान :** भाषा की परिभाषा, भाषा का विकास एवं स्वरूप, भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रायोगिक, विश्व के भाषा परिवार।	15
द्वितीय	**स्वन प्रक्रिया :** स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वाग्वयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनविकार तथा कारण, हिंदी की स्वनिम व्यवस्था–खंड्य, खंड्येतर, स्वन–नियम। **अर्थविज्ञान :** शब्द और अर्थ का संबंध, शब्द भेद, अर्थ परिवर्तन दिशाएं एवं कारण।	15
तृतीय	**हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :** प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ–वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ–पालि, प्राकृत–शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण, द्रविड़ परिवार की भाषाओं का सामान्य परिचय। **हिंदी का भौगोलिक विस्तार :** हिंदी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियों का सामान्य परिचय। खड़ीबोली, कौरवी, अवधी और ब्रज की ध्वनि और रूप संबंधी विशेषताएँ।	15
चतुर्थ	**हिंदी का भाषिक स्वरूप :** हिंदी वर्तनी और उच्चारण के सिद्धांत। हिंदी शब्द रचना–उपसर्ग, प्रत्यय, समास, संधि। **रूपरचना :** लिंग; वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण	15

	और क्रियारूप। हिंदी के मानकीकरण की समस्याएँ, वर्तनी, उच्चारण, व्याकरण, लिपि। **हिंदी वाक्य रचना :** पदक्रम और अन्विति।	
पंचम	**देवनागरी लिपि :** व्युत्पत्ति, विशेषताएँ, समस्याएँ और मानकीकरण, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता। हिंदी की संवैधानिक स्थिति।	15

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अतिलघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

निबंधात्मक / आलोचनात्मक प्रश्न	3 X 13	=	39 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	4 X 5	=	20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	11 X 1	=	11 अंक
योग		=	70 अंक

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन / विशिष्ट व्याख्यान / फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन / प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा

१	हिंदी भाषा	- कैलाश चंद्र भाटिया
२	भाषा विवेचन	- भगीरथ मिश्र
३	हिंदी- दशा और दिशा	- प्रभाकर श्रोत्रिय
४	भाषा विज्ञान कोश	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
५	भारतीय भाषा विज्ञान	- किशोरी दास वाजपेई
६	हिंदी की वर्तनी तथा शब्द-विश्लेषण	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
७	हिंदी भाषा का इतिहास	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
८	हिंदी भाषा की संरचना	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
९	हिंदी व्याकरण	- उमेश चंद्र शुक्ल
१०	भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र	- कपिल देव द्विवेदी
११	हिंदी भाषा और साहित्य	- किरनबाला
१२	भाषा विज्ञान	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
१३	हिंदी भाषा	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
१४	अर्थ विज्ञान	- ब्रज मोहन
१५	ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिंदी	- रामविलास शर्मा
१६	हिंदी भाषा की संधि संरचना	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
१७	हिंदी भाषा की सामाजिक संरचना	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
१८	हिंदी भाषा की ध्वनि संरचना	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
१९	हिंदी भाषा की लिपि संरचना	- डॉ भोलानाथ तिवारी
२०	हिंदी भाषा की शब्द संरचना	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
२१	अवधी का विकास	- बाबूराम सक्सेना
२२	देवनागरी लेखन तथा हिंदी वर्तनी व्यवस्था	- लक्ष्मी नारायण
२३	आधुनिक भाषा विज्ञान	- डॉ० राज मणि शर्मा
२४	हिंदी भाषा की रूप संरचना	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
२५	हिंदी भाषा की वाक्य संरचना	- डॉ० भोलानाथ तिवारी

२६	हिंदी भाषा की शब्द संरचना	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
२७	हिंदी भाषा की आर्थी संरचना	- डॉ० भोलानाथ तिवारी
२८	भाषा विज्ञान	- प्रो नरेश मिश्र
२९	हिंदी भाषा में वर्तनी एवं उच्चारण संबंधी त्रुटियां एवं उपचार	- भंवर लाल नागदा
३०	भाषा की उत्पत्ति, रचना और विकास	- डॉ० विनोद मणि दिवाकर
३१	भाषा का समाजशास्त्र	- राजेंद्र प्रसाद सिंह
३२	हिंदी भाषा तथा देवनागरी का इतिहास	- ओमप्रकाश शर्मा
३३	हिंदी भाषा संदर्भ और संरचना	- डॉ० त्रिलोचन पांडेय
३४	भारतीय आर्य भाषा समस्या	- रामविलास शर्मा
३५	हिंदी और उसकी उपभाषाएँ	- विमलेश कांति वर्मा
३६	भारत के भाषा परिवार	- डॉ० राजमल बोरा
३७	हिंदी भाषा का उद्गम और विकास	- उदयनारायण तिवारी
३८	भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा	- राजनाथ भट्ट
३९	नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी	- डॉ० अनंत चौधरी
४०	हिंदी भाषा के अक्षर तथा शब्द की सीमा	- डॉ० कैलाश चंद्र भाटिया
४१	भारतीय भाषा विज्ञान का सामाजिक धरातल	- शमशेर सिंह नरूला
४२	हिंदी शब्द समूह का विकास	- डॉ० नरेश मिश्र
४३	भाषा विभाग की भूमिका	- डॉ० देवेंद्रनाथ शर्मा
४४	हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम	- रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
४५	आधुनिक भाषा विज्ञान	- डॉ० राजमणि शर्मा
४६	राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएं और समाधान	- आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
४७	भारत की भाषा समस्या	- रामविलास शर्मा
४८	भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी	- रामविलास शर्मा
४९	भाषा और समाज	- रामविलास शर्मा
५०	भाषा विज्ञान और मानक हिंदी	- प्रो० नरेश मिश्र

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : तृतीय
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यंत)**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : आधुनिक हिंदी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए हैं। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएं, भावनाएं एवं नूतन विचार इसमें अभिव्यक्त हुए हैं। मानव इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवाहमान आधुनिक हिंदीकाव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।
(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

पाठ्यक्रम परिणाम : 1 आधुनिक काव्य प्रवृत्तियों को समझेंगे। 2 हिंदी कविता पर राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव को समझ सकेंगे। 3 हिंदी साहित्य के बदलते परिप्रेक्ष्यों को समझेंगे। 4 इतिवृत्तात्मक साहित्य के माध्यम से भारतीय पौराणिक, ऐतिहासिक मिथकों को नए संदर्भों के साथ जानेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय			कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	मैथिलीशरण गुप्त	–	साकेत का नवम सर्ग	15
द्वितीय	जयशंकर प्रसाद	–	कामायनी (श्रद्धा, इड़ा, लज्जा और आनंद सर्ग)	15
तृतीय	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	–	सरोज स्मृति	15
चतुर्थ	सुमित्रानंदन पंत महादेवी वर्मा	– –	परिवर्तन, प्रथम रश्मि 'यामा' के प्रारंभिक पाँच गीत	15
पंचम	द्रुतपाठ – 1 जगन्नाथ दास 'रत्नाकर', 2 माखनलाल चतुर्वेदी, 3 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', 4 सुभद्रा कुमारी चौहान, 5 गोपाल सिंह नेपाली, 6 हरिवंशराय बच्चन, 7 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'।			15

व्याख्याएँ	2 X 7.5 =	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	3 X 5 =	15 अंक
अति लघूत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
योग	=	70 अंक

नोट 01 निबंधात्मक प्रश्न एवं व्याख्याएं इकाई संख्या 01, 02, 03 एवं 04 से पूछी जाएंगी।

02 लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

03 द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय / अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे जो उनके जीवन

परिचय तथा रचना से संबंधित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।
शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षाअध्यापन / विशिष्ट व्याख्यान / फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग
1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)
अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।
मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन / प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यन्त)

1	निराला की साहित्य साधना भाग 1 एवं 2	– रामविलास शर्मा
2	प्रसाद का पूर्ववर्ती काव्य	– उषा मिश्र
3	कामायनी लोचन	– डॉ० उदयभानु सिंह
4	कविता का गल्प	– अशोक वाजपेयी
5	महाप्राण निराला समग्र मूल्यांकन	– वीरेंद्र सिंह
6	कामायनी रूपक	– डॉ0 विनय
7	महाप्राण निराला	– प्रो0 वकील
8	छायावादी काव्य : कुछ नए संदर्भ	– डॉ0 मृदुला जुगरान
9	प्रसाद, निराला और पंत : छायावाद और उसकी वृहत्त्रयी	– विजय बहादुर सिंह
10	साकेत विचार और विश्लेषण	– डॉ0 वचन देव कुमार
11	जयशंकर प्रसाद	– नंद दुलारे वाजपेयी
12	प्रसाद और उनका साहित्य	– विनोद शंकर व्यास
13	प्रसाद का काव्य	– डॉ0 प्रेमशंकर
14	कामायनी : एक पुनर्विचार	– गजानन माधव मुक्तिबोध
15	क्रांतिकारी कवि निराला	– डॉ0 बच्चन सिंह
16	नवजागरण और छायावाद	– डॉ0 महेंद्रनाथ राय
17	महाकवि निराला	– नंद दुलारे वाजपेयी
18	साकेत एक अध्ययन	– डॉ0 नगेंद्र
19	नवम् सर्ग का काव्य वैभव	– कन्हैयालाल सहगल
20	कामायनी के अध्ययन की समस्याएं	– डॉ0 नगेंद्र
21	छायावाद की प्रासंगिकता	– रमेश चंद्र शाह
22	सुमित्रानंदन पंत	– डॉ0 नगेंद्र
23	भारतेंदु ग्रंथावली	– नागरी प्रचारिणी सभा काशी
24	भारतेंदु और उनके सहयोगी	– डॉ0 किशोरी लाल गुप्त
25	भारतेंदु हरिश्चंद्र	– डॉ0 रामविलास शर्मा
26	निराला : आत्महंता आस्था	– दूधनाथ सिंह
27	पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण	– रामधारी सिंह दिनकर
28	नवीन और उनका काव्य	– जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव
29	छायावाद	– नामवर सिंह
30	प्रसाद, निराला, अज्ञेय	– रामस्वरूप चतुर्वेदी
31	आधुनिक कविता के बदलते प्रतिमान	– डॉ0 श्रीनिवास पांडेय
32	नवजागरण और छायावाद	– डॉ0 महेंद्रनाथ राय
33	साहित्य और समय	– अवधेश प्रधान

34	हिंदी साहित्य बींसवी शताब्दी	– नंद दुलारे वाजपेयी
35	महादेवी संचयिता	– निर्मला जैन (संपा०)
36	आज के लोकप्रिय कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	– भवानी प्रसाद मिश्र
37	महादेवी वर्मा	– शचीरानी गुर्टू
38	महादेवी वर्मा	– जगदीश गुप्त
39	मेरी श्रेष्ठ कविताएं	– हरिवंशराय बच्चन
40	सतरंगिनी	– हरिवंशराय बच्चन
41	कविता का अमरफल	– लीलाधर जगूड़ी
42	स्वच्छन्द (सुमित्रानंदन पंत की कविताओं का संचयन)	– सं० अशोक वाजपेयी
43	कविता का शुक्ल पक्ष	– सं० बच्चन सिंह– अवधेश प्रधान
44	मुगलबादशाहों की हिंदी कविता	– सं० मैनेजर पाण्डेय
45	हिंदी की जनपदीय कविता	– सं० विद्यानिवास मिश्र
46	अन्त–अनन्त	– सूर्यकांत त्रिपाठी निराला सं० नंदकिशार नवल

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : तृतीय
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविकता परखी जा सके। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता से समझने और जानने–परखने के लिए भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1 प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्यिक सिद्धान्तों को जानेंगे। 2 पश्चिमी काव्य विचारकों के साहित्य संबंधी विचारों से परिचित होंगे। 3 भारतीय तथा पाश्चात्य विचारों के साहित्यिक प्रभाव को समझ सकेंगे। 4 साहित्य रचना संबंधी नियमों को समझ सकेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	संस्कृत काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास एवं काव्यांग विवेचन, काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य के प्रमुख रूप।	10
द्वितीय	**रस सिद्धांत** :– रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण। **ध्वनि सिद्धांत** :– ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ। **औचित्य सिद्धांत** :– औचित्य की अवधारणा, औचित्य सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।	15
तृतीय	**अलंकार सिद्धांत** :– अलंकार की अवधारणा, अलंकार सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ। **रीति सिद्धांत** :– रीति की अवधारणा, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ। **वक्रोक्ति सिद्धांत** :– वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।	15
चतुर्थ	**प्लेटो** – काव्य सिद्धांत – आदर्शवाद, अनुकरण सिद्धान्त, उपयोगितावाद का सिद्धान्त **अरस्तू** –अनुकरण सिद्धांत, विरेचन सिद्धांत, त्रासदी सिद्धांत।	12
पंचम	**लोंजाइनस** –उदात्त की अवधारणा। **आई0ए0 रिचर्डस** – मूल्य सिद्धान्त एवं सम्प्रेषण। **कॉलरिज** –कल्पना सिद्धांत। **क्रोचे** –अभिव्यंजनावाद। **टी0एस0 इलियट** – निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत।	12
षष्ठ	शास्त्रीयतावाद और स्वच्छन्दतावाद, नई समीक्षा	11
	निबंधात्मक / आलोचनात्मक प्रश्न 3 X 13 = 39 अंक लघु उत्तरीय प्रश्न 4 X 5 = 20 अंक अति लघु उत्तरीय प्रश्न 11 X 1 = 11 अंक योग = 70 अंक	

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षाअध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग
1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)
अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।
मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : <u>भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र</u>

1	भारतीय काव्य विमर्श	– राममूर्ति त्रिपाठी
2	हिंदी साहित्य कोश (प्रथम खंड)	– संपादक धीरेंद्र वर्मा
3	रस सिद्धांत	– डॉ० नगेंद्र
4	काव्यशास्त्र की रूपरेखा	– डॉ० रामदत्त भारद्वाज
5	काव्य दर्पण	– डॉ० जगदीश प्रसाद कौशिक
6	भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिमान	– डॉ० जगदीश प्रसाद कौशिक
7	रस सिद्धांत के विविध आयाम	– संपादक– आनंद प्रकाश दीक्षित
8	भारतीय काव्यशास्त्र	– रामानंद शर्मा
9	अर्द्धशती का भारतीय काव्य चिंतन : पक्ष और विपक्ष	– राममूर्ति त्रिपाठी
10	अलंकार दर्पण	– डॉ० नरेश मिश्र
11	भारतीय काव्य सिद्धांत	– डॉ० भगीरथ मिश्र
12	रस मीमांसा	– रामचंद्र शुक्ल
13	रस सिद्धांत : स्वरुप विश्लेषण	– डॉ० आनंद प्रकाश दीक्षित
14	काव्यालोक	– राम दहिन मिश्र
15	ध्वनि संप्रदाय और उसके सिद्धांत	– डॉ० भोलाशंकर व्यास
16	औचित्य मीमांसा	– राममूर्ति त्रिपाठी
17	अलंकार मुक्तावली	– देवेंद्र नाथ शर्मा
18	रीति विज्ञान	– विद्यानिवास मिश्र
19	शैली विज्ञान और आलोचना की नई भूमिका	– रवींद्र नाथ श्रीवास्तव
20	भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	– डॉ० नगेंद्र
21	भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज	– राममूर्ति त्रिपाठीं
22	साहित्यशास्त्र	– देश पांडेय
23	भारतीय काव्य विमर्श	– राममूर्ति त्रिपाठी
24	साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका	– मैनेजर पांडेय
25	रामविलास शर्मा के समीक्षा सिद्धांत	– डॉ० माताप्रसाद
26	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास	– पी० वी० काणे
27	भारतीय काव्यशास्त्र	– सत्यदेव चौधरी
28	ध्वन्यालोक लोचन	– जगन्नाथ पाठक
29	भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज	– राममूर्ति त्रिपाठी
30	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा	– रामचंद्र तिवारी
31	काव्यभाषा, अलंकार रचना एवं अन्य समस्याएँ	– योगेंद्र प्रताप सिंह
32	व्यावहारिक आलोचना	– कृपाशंकर सिंह/जगन्न सिंह
33	पाश्चात्य साहित्य चिंतन	– निर्मला जैन/कुसुम बांठियां

34	हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार	– कृष्णदत्त पालीवाल
35	उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श	– सुधीश पचौरी
36	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	– देवेंद्र नाथ शर्मा
37	नई समीक्षा के प्रतिमान	– डॉ0 निर्मला जैन
38	पाश्चात्य साहित्यशास्त्र	– डॉ0 रामपूजन तिवारी
39	पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र : सिद्धांत और परिदृश्य	– डॉ0 नगेंद्र
40	आलोचक और आलोचना	– बच्चन सिंह
41	आलोचना के बदलते मानदंड और हिंदी साहित्य	– डॉ0 शिवकरण सिंह
42	रिचर्ड्स के आलोचना सिद्धांत	– डॉ0 शंभुदत्त झा
43	पाश्चात्य काव्यशास्त्र इतिहास सिद्धांत और वाद	– डॉ0 भगीरथ मिश्र
44	पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र	– डॉ0 शांतिगोपाल पुरोहित
45	पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास	– डॉ0 तारकनाथ बाली
46	अरस्तू का काव्यशास्त्र	– डॉ0 नगेंद्र (संपा0)
47	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	– अशोक के0 शाह
48	अरस्तू का त्रासदी विवेचन	– डॉ0 देवदत्त कौशिक
49	काव्य में उदात्त तत्व	– डॉ0 नगेंद्र (सं०)
50	कला की जरूरत	– रमेश उपाध्याय
51	भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज	– राममूर्ति त्रिपाठी
52	पाश्चात्य काव्य चिंतन	– करूणाशंकर उपाध्याय
53	सौन्दर्यशास्त्र के तत्व	– कुमार विमल

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : तृतीय
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **विशिष्ट रचनाकार**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : हिंदी की विविध विधाओं के अध्ययन के साथ ही साथ हिंदी के उन कालजयी रचनाकारों का अध्ययन करना आवश्यक है, जिन्होंने चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है और जिनका लेखन आज भी प्रासंगिक है। अतः इन रचनाकारों की साहित्यिक दृष्टि को समझना आवश्यक है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. साहित्यकार के विशिष्ट साहित्यिक दृष्टिकोण एवं हिंदी साहित्य में साहित्यकार के महत्व को समझ सकेंगे। 2. तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, साहित्यिक परिवेश को जानेंगे। 3. लोक समाज, लोक साहित्य और लोक भाषा को समझेंगे। 4. मानवीय संवेदनाओं और इसकी गहराई को साहित्यकार की लेखनी के माध्यम से जानेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य / ऐच्छिक पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

विकल्प सं०	प्रश्नपत्र का नाम	विषय (दिए गए विकल्पों में से किसी एक विकल्प का अध्ययन अनिवार्य है।)	कुल व्याख्यान संख्या :75
प्रथम	**कबीरदास**	**कबीरदास** पाठ्यग्रंथ : (क) कबीर ग्रंथावली – सं0 डॉ0 श्यामसुंदर दास **(विकल्प एक)**	75
द्वितीय	**सूरदास**	**सूरदास** पाठ्यग्रंथ : सूरसागर – सार (संपूर्ण) – सं0 डॉ0 धीरेंद्र वर्मा, नवीन संस्करण। **(विकल्प दो)**	75
तृतीय	**गोस्वामी तुलसीदास**	**गोस्वामी तुलसीदास** पाठ्यग्रंथ : 1 रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड – संपूर्ण) 326 दोहा) 2 कवितावली – (केवल उत्तरकाण्ड, कुल 183 छंद) 3 विनय पत्रिका – चुने हुए कुल 51 पद (पद संख्या :– 1, 3, 4, 5, 7, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 73, 76, 78, 79, 85, 88, 89, 90, 94, 97, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 111, 113, 114, 115, 121, 124, 155, 156, 158, 159, 160, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 169, 172, 174, 185, 198, 201, 272)। **(विकल्प तीन)**	75
चतुर्थ	**जयशंकर प्रसाद**	**जयशंकर प्रसाद** पाठ्य ग्रंथ : 1 कामायनी (संपूर्ण) 2 ध्रुवस्वामिनी 3 कहानी : आकाशदीप, गुंडा, देवरथ। 4 काव्य कला तथा छायावाद और यथार्थ (प्रथम निबंध और अंतिम निबंध) **(विकल्प चार)**	75
पंचम	**प्रेमचंद**	**प्रेमचंद** (क) रंगभूमि (ख) कायाकल्प (ग) गबन (घ) मानसरोवर (खंड एक) **(विकल्प पाँच)**	75

षष्ठ	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	**सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** पाठ्य ग्रंथ : 1. नदी के द्वीप और अपने अपने अजनबी, 2. आंगन के पार द्वार, 3. अज्ञेय की प्रतिनिधि कहानियाँ (सं० कृष्णदत्त पालीवाल), आत्मपरक (निबंध संग्रह) – अज्ञेय। **(विकल्प छः)**	**75**
	व्याख्याएँ 2 X 7.5 = 15 अंक निबंधात्मक प्रश्न 2 X 15 = 30 अंक लघु उत्तरीय प्रश्न 3 X 5 = 15 अंक अति लघुत्तरीय प्रश्न 10 X 1 = 10 अंक योग = 70 अंक नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।		

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links) www.hindisamay.com

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : <u>विशिष्ट रचनाकार</u>

1	भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य	– मैनेजर पांडेय
2	महाकवि-सूरदास	– आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी
3	प्रसाद संदर्भ	– संपादक : प्रमिला शर्मा
4	प्रसाद साहित्य : सर्जना के आयाम	– संपादक : माधुरी सुबोध
5	गोस्वामी तुलसीदास	– संपादक : रामचंद्र शुक्ल
6	तुलसीदास	– डॉ0 माताप्रसाद गुप्त
7	तुलसी और उनका युग	– डॉ0 राजपति दीक्षित
8	तुलसी संदर्भ	– डॉ0 नगेंद्र
9	तुलसी	– उदय भानु सिंह
10	जयशंकर प्रसाद	– नंद दुलारे वाजपेयी
11	कामायनी का पुनर्मूल्यांकन	– रामस्वरूप चतुर्वेदी
12	अज्ञेय कवि और काव्य	– राजेंद्र प्रसाद
13	अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम	– प्रो0 नवीन चंद्र लोहनी
14	अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्प विधि	– डॉ0 सत्यपाल
15	अज्ञेय का काव्य – भाव एवं शिल्प	– डॉ0 शंकर बसंत मुद्गल
16	आज के लोकप्रिय हिंदी कवि : अज्ञेय	– विद्यानिवास मिश्र
17	अज्ञेय : एक अध्ययन	– भोला भाई पटेल
18	अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम	– डॉ0 पुष्पा शर्मा
19	कामायनी रूपक	– डॉ0 विनय
20	कबीर	– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

21 नदी के द्वीप में वैयक्तिक स्वच्छंदतावाद — आशा अरोड़ा
22 हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास — रामस्वरूप चतुर्वेदी

सहायक ग्रंथ : कबीर दास

1 कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी।
2 कबीर दर्शन – रामजीलाल सहायक।
3 कबीर : एक नई दृष्टि – डॉ0 रघुवंश।
4 कबीर का रहस्यवाद – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी।
5 हिंदी संत काव्यों में परंपरा और प्रयोग – डॉ0 भगवान देव पांडेय।
6 कबीर एक अनुशीलन – डॉ0 रामकुमार वर्मा।
7 अकथ कहानी प्रेम की – पुरूषोत्तम अग्रवाल।
8 कबीर का रहस्यवाद – रामकुमार वर्मा।
9 कबीर – सं0 विजयेंद्र स्नातक।

सहायक ग्रंथ :– सूरदास

1 सूरदास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2 सूर–साहित्य – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।
3 अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय – डॉ0 दीनदयाल गुप्ता।
4 सूर और उनका साहित्य – डॉ0 हरिवंश लाल शर्मा।
5 हिंदी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका – डॉ0 रामनरेश वर्मा।
6 सूरदास और कृष्ण भक्ति काव्य – डॉ0 मैनेजर पांडेय।
7 सूरदास – नंददुलारे वाजपेयी।
8 हिंदी कृष्णभक्ति साहित्य – मधुर भाव की उपासना – प्रो0 पूर्णमासी राय।
9 मीरा का काव्य – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
10 मीराबाई – डॉ0 श्रीकृष्ण लाल।
11 भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य – मैनेजर पांडेय।

सहायक ग्रंथ :– तुलसीदास

1 गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2 तुलसीदास – डॉ0 माताप्रसाद गुप्त।
3 मानस दर्शन – डॉ0 श्रीकृष्णलाल।
4 तुलसी और उनका युग – डॉ0 राजपति दीक्षित।
5 तुलसी की जीवन भूमि – चंद्रबलि पांडेय।
6 रामकथा का विकास – कामिल बुल्के हिंदी परिषद्, प्रयाग
7 मानस की रूसी भूमिका (हिंदी अनुवाद) – वारान्निकोव, विद्या मंदिर प्रकाशन, लखनऊ
8 संत तुलसीदास और उनका संदेश – डॉ0 राजपति दीक्षित।
9 गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और उसका महत्व – डॉ0 ज्ञानवती त्रिवेदी।
10 लोकवादी तुलसी – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
11 तुलसीदास – ग्रियर्सन।
12 तुलसी संदर्भ – डॉ0 नगेंद्र

सहायक ग्रंथ :– जयशंकर प्रसाद

1 जयशंकर प्रसाद – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी।
2 नया साहित्य : नये प्रश्न – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी।
3 जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला – डॉ0 रामेश्वर खंडेलवाल।
4 प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास।
5 प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेमशंकर।
6 प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।

7 प्रसाद के जीवन और साहित्य – डॉ0 रामरतन भटनागर।
8 हिंदी नाटक – डॉ0 बच्चन सिंह।
9 प्रसाद का गद्य साहित्य – डॉ0 राजमणि शर्मा।
10 प्रसाद : दुखांत नाटक – रामकृष्ण शुक्ल श्रीमुख।
11 नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान – डॉ0 वशिष्ठ नागर त्रिपाठी।
12 प्रसाद साहित्य में अतीत चिंतन – डॉ0 धर्मपाल कपूर
13 कामायनी का पुनर्मूल्यांकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी
14 प्रसाद साहित्य सर्जना के आयाम – माधुरी सुबोध (संपादक)
15 प्रसाद संदर्भ – प्रमिला शर्मा (संपादक)

सहायक ग्रंथ – प्रेमचंद

1 प्रेमचंद – घर में – शिवरानी देवी।
2 प्रेमचंद : एक विवेचन – इंद्रनाथ मदान।
3 प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा।
4 प्रेमचंद : कलम का सिपाही –अमृतराय।
5 प्रेमचंद – मदनगोपाल
6 प्रेमचंद : जीवन, कला एवं कृतित्व – हंसराज रहबर।
7 प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन – नंददुलारे वाजपेयी।
8 कथाकार प्रेमचंद – मन्मथनाथ गुप्त।
9 प्रेमचंद : एक अध्ययन – राजेश्वर गुरु।
10 प्रेमचंद की उपन्यास कला – जनार्दन प्रसाद राय।
11 प्रेमचंद एवं भारतीय किसान – प्रो० रामबक्ष जाट।
12 प्रेमचंद : गंगा प्रसाद विमल।
13 प्रेमचंद के साहित्य सिद्धांत – नरेंद्र कोहली।
14 प्रेमचंद : एक कला व्यक्तित्व – जैनेंद्र।
15 प्रेमचंद स्मृति – सं0 अमृतराय।
16 प्रेमचंद : चिंतन और कला – सं0 इंद्रनाथ मदान।
17 प्रेमचंद और गोर्की – श्री मदनलाल 'मधु'।
18 हिंदी उपन्यास : (विशेषतः प्रेमचंद) : नलिन विलोचन शर्मा।

सहायक ग्रंथ :– सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

1 अज्ञेय का कथा साहित्य – ओम प्रभाकर।
2 अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि – सत्यपाल चुघ।
3 अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
4 शिखर से सागर तक – डॉ0 रामकमल राय।
5 अज्ञेय और नयी कविता – डॉ0 चंद्रकला त्रिपाठी।
6 अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम – डॉ0 नवीन चंद्र लोहनी।
7 अज्ञेय कवि और काव्य – डॉ0 राजेंद्र प्रसाद।
8 अज्ञेय का कवि कर्म – कृष्णदत्त पालीवाल।
9 अज्ञेय का काव्य भाव और शिल्प – डॉ0 शंकर बसंत मुद्गल।
10 आज के लोकप्रिय कवि अज्ञेय – विद्यानिवास मिश्र।
11 अज्ञेय एक अध्ययन – भोला भाई पटेल।
12 अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम – डॉ0 पुष्पा शर्मा।
13 अज्ञेय वन का छंद – विद्यानिवास मिश्र

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : तृतीय
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **पत्रकारिता प्रशिक्षण**	(सैद्धांतिकी / प्रायोगिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : पत्रकारिता लोकतान्त्रिक जीवन प्रणाली का मुख्य स्तम्भ है। यह सिमटते विश्व में स्नायु–तंतुओं के समान कार्य कर रही है। दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट आदि में इसका विकसित स्वरूप देखा जा सकता है। साहित्यिकता, जागरूकता के साथ–साथ रोजगारपरकता की आकांक्षा की पूर्ति भी इससे होती है। पुनर्जागरण, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, नारी तथा दलित जागरण में इसकी क्रांतिकारी भूमिका रही है। अतः इसका अध्ययन वर्तमान युग की अनिवार्यता बन गयी है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1 पत्रकारिता के इतिहास, स्वरूप, क्षेत्र का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होगा। 2 पत्रकारिता की सैद्धांतिकी एवं व्यवहारिक पक्ष से परिचित होंगे। 3 आधुनिक युग में पत्रकारिता के बदलते प्रतिमानों को भी समझने में सुगमता होगी।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	**प्रिंट पत्रकारिता** : हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास। समाचार के सिद्धांत, समाचार के मूल तत्व, समाचार के विभिन्न स्रोत। संपादन कला के सामान्य सिद्धांतः शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, आमुख और समाचार प्रस्तुतीकरण। दृश्य सामग्री–कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स की व्यवस्था एवं फोटो पत्रकारिता, पीत पत्रकारिता।	15
द्वितीय	पत्रकारिता के प्रकार पत्रकारिता से संबंधित प्रमुख लेखन : संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, पुस्तक समीक्षा, ब्लॉग लेखन।	15
तृतीय	**इलेक्ट्रॉनिक माध्यम : इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : स्वरूप एवं विस्तार :–** 1. रेडियो पत्रकारिता :– समाचार तकनीक, तकनीक के विविध आयाम, रेडियो बुलेटिन। 2. टेलीविजन में समाचार संकलन, संपादन, प्रस्तुतीकरण, प्रस्तोता। 3 इंटरनेट पत्रकारिता 4 सोशल मीडिया	15
चतुर्थ	समाचार संकलन तकनीक :– 1. साक्षात्कार, 2. प्रेसवार्ता, 3. संसदीय रिपोर्टिंग, 4. विधि समाचार, 5. खेल समाचार, 6. भाषणों, बैठकों, संगोष्ठियों आदि के समाचार तथा प्रेस विज्ञप्तियाँ 7. दुर्घटनाओं, आपदाओं, अपराधों की रिपोर्टिंग।	15
पंचम	रेडियो एवं टेलीविजन की तकनीक एवं उपकरण :– 1. माइक्रोफोन, रिकॉर्डर, मिक्सर, कैमरा और मल्टीमीडिया, मोबाईल।	15

निबंधात्मक / आलोचनात्मक प्रश्न	3 X 13	=	39 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	4 X 5	=	20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	11 X 1	=	11 अंक
योग		=	70 अंक

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे

जाएंगे।
शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षाअध्यापन / विशिष्ट व्याख्यान / फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग
1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)
अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।
मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन / प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : पत्रकारिता प्रशिक्षण

1	पत्रकारिता इतिहास और प्रश्न	– कृष्ण बिहारी मिश्र
2	पत्रकारिता की चुनौतियाँ	– गणेश मंत्री
3	भारतीय पत्रकारिता : कल आज और कल	– सुरेश गौतम
4	हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार	– ठाकुर दत्त आलोक
5	पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य	– राजकिशोर
6	उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक	– हर्ष देव
7	प्रसार भारती प्रसारण नीति	– सुधीश पचौरी
8	हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ	– विनोद गोदरे
9	हिंदी पत्रकारिता : कल आज और कल	– सुरेश गौतम
10	मीडिया का यथार्थ	– डॉ0 रतन कुमार पांडेय
11	सिनेमा : कल आज और कल	– विनोद भारद्वाज
12	हिंदी पत्रकारिता और राजभाषा विमर्श	– शशि नारायण
13	आज की दुनिया में सूचना पद्धति	– मार्क पोस्टर
14	पत्रकारिता संदर्भ कोश	– राम प्रकाश
15	टेलीविजन प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक रूप	– दीपू राय
16	साहित्यिक पत्रकारिता	– ज्योतिष जोशी
17	आर्थिक पत्रकारिता	– भरत झुनझुनवाला
18	हिंदी पत्रकारिता : आधुनिक संदर्भ	– देव प्रकाश मिश्र
19	नवजागरणकालीन पत्रकारिता (भाग–1 व 2)	– सं० कृष्ण दत्त शर्मा
20	रेडियो प्रसारण	– कौशल शर्मा
21	मीडिया विमर्श	– रामशरण जोशी
22	मीडिया की परख	– सुधीश पचौरी
23	दूरदर्शन विकास से बाजार तक	– सुधीश पचौरी
24	पत्रकार और पत्रकारिता प्रशिक्षण	– अरविंद मोहन
25	21वीं सदी और हिंदी पत्रकारिता : अन्तरंग पहचान	– अमरेंद्र निशान्त
26	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सिद्धांत	– रूपचंद गौतम
27	संपादन कला एवं प्रूफ पठन	– डॉ0 हरिमोहन
28	पत्रकारिता एवं संपादन कला	– एन0सी0 पंथ
29	पत्रकारिता : मिशन से मीडिया तक	– अखिलेश मिश्र
30	सूचना प्रौद्योगिकी एवं पत्रकारिता	– अशोक मलिक
31	टेलीविजन पत्रकारिता	– ओमकार चौधरी
32	पत्रकारिता प्रशिक्षण	– डॉ0 राजेंद्र मिश्र / राकेश शर्मा
33	इंटरनेट पत्रकारिता	– सुरेश कुमार

34	टेलीविजन लेखन	– असगर वजाहत
35	फीचर लेखन : स्वरूप और शिल्प	– डॉ0 मनोहर प्रभाकर
36	समकालीन पत्रकारिता : मूल्यांकन और मुद्दे	– राजकिशोर
37	खेल पत्रकारिता	– सुशील दोसी / सुरेश कौशिक
38	लोकतंत्र और पत्रकारिता	– संपादक अमर सिंह वधान
39	भेंटवार्ता और प्रेस कॉन्फ्रेंस	– डॉ0 नंद किशोर तिरखा
40	समाचार पत्र प्रबंधन	– गुलाब कोठारी
41	भूमंडलीकरण और मीडिया	– कुमुद शर्मा
42	बातचीत की कला	– मानवती आर्या / कृष्ण चंद्र आर्या
43	पत्रकारिता की विभिन्न विधाएँ	– डॉ0 निशांत सिंह
44	कैरियर पत्रकारिता	– रूप चंद गौतम
45	फिल्म पत्रकारिता	– डॉ0 मनोज पटौदिया
46	आधुनिक विज्ञापन	– प्रेमचन्द्र पातंजलि
47	ब्रेकिंग न्यूज	– पूण्य प्रसून वाजपेयी
48	टेलीविजन समीक्षा : सिद्धान्त और व्यवहार	– सुधीश पचौरी
49	विज्ञापन कला	– मधु धवन
50	संचार माध्यम लेखन	– गौरी शंकर रैना
51	पटकथा कैसे लिखे	– राजेन्द्र पांडे
52	सिर्फ समाचार	– धनंजय चोपड़ा

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : चतुर्थ
	विषय : हिंदी	
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **छायावादोत्तर काव्य**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : छायावादी कृतित्व में यथार्थ और स्वप्न दोनों की समान संस्थिति हैं। राष्ट्रीय–चेतना और सांस्कृतिक जागरण की प्रवृत्ति अपनी समस्त शक्ति–सामर्थ्य तथा कतिपय नवीन प्रयोगवादिता के साथ छायावादोत्तर–काव्य में विकसित होती रही। यहाँ प्रयोग और प्रगतिशीलता के स्वर जोर पकड़ते गए जिसके बीज–बिन्दु छायावाद में पड़ चुके थे। औद्योगीकरण के साथ–साथ शोषण की वृत्ति तथा अन्य सामाजिक विद्रूपताओं ने प्रगतिशील साहित्यांदोलनों को बढ़ावा दिया। नवीन मार्ग की अन्वेषी विचारधारा ने प्रयोगवादी काव्यधारा के रूप में स्वंय को विकसित किया। स्वतंत्रता के पश्चात मोहभंग की स्थिति ने जन्म लिया। स्वप्न अपूर्ण रहे, संकल्प टूटे, आक्रोश और विद्रोह की प्रवृत्ति व्यापक पैमाने पर परिलक्षित हुई। विज्ञान ने बौद्धिकता का विकास किया, फलस्वरूप नये–नये बिंब, प्रतीक एवं अभिव्यंजना–रूप विकसित हुए। अंतर्विरोधी स्थितियों ने मूल्य–विघटन, तनाव–संक्रमण, मोहभंग की स्थिति उत्पन्न की, जिसकी अभिव्यंजना विविध रूपों में अभिव्यक्त हुई। वर्तमान समस्याओं, संवेदनाओं की व्यापकता विश्वजनीन हो गई है। इस वैश्विक–संदर्भ को ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता हेतु छायावादोत्तर तथा समकालीन साहित्य का विशेष अध्ययन परमावश्यक है। (इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

पाठ्यक्रम परिणाम : 1 छायावाद के पश्चात की प्रमुख प्रवृत्तियों को जान पाएंगे। 2 छायावादोत्तर काव्य में भाव पक्ष एवं कला पक्ष के स्तर में हुए विभिन्न परिवतनों को समझ सकेंगे। 3 विभिन्न महत्वपूर्ण कवियों के काव्य के माध्यम से नवीन मूल्यों भावों एवं संवेदनाओं से परिचित हो सकेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	छायावादोत्तर काव्यांदोलन : युगबोध एवं शिल्प प्रविधि	15
द्वितीय	राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा, समानांतर काव्यधारा, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता, नवगीत।	15
तृतीय	अज्ञेय – असाध्य वीणा, नदी के द्वीप। सर्वेश्वर दयाल – कुआनो नदी नागार्जुन – अकाल और उसके बाद, कालिदास। मुक्तिबोध – ब्रह्मराक्षस।	15
चतुर्थ	रामधारी सिंह दिनकर –उर्वशी (तृतीय अंक) धूमिल – नक्सलवाड़ी, रोटी और संसद भवानी प्रसाद मिश्र – गीत फरोश	15
पंचम	द्रुतपाठ :– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जगदीशचन्द्र गुप्त, लीलाधर जगूड़ी, केदारनाथ सिंह, श्रीनरेश मेहता, त्रिलोचन, शमशेर बहादुर सिंह, केदारनाथ अग्रवाल, दुष्यंत कुमार, सुमन राजे।	15

व्याख्याएँ	2 X 7.5 = 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	2 X 15 = 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	3 X 5 = 15 अंक
अति लघूत्तरीय प्रश्न	10 X 1 = 10 अंक
योग	= 70 अंक

नोट 01 :– व्याख्याएं इकाई 03 एवं 04 से पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01 से 04 तक पूछे जाएंगे। 02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

नोटः द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

संदर्भ सूची :– छायावादोत्तर काव्य

1	रघुवीर सहाय का कविकर्म	– डॉ० सुरेश शर्मा
2	आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान	– केदारनाथ सिंह
3	आज के लोकप्रिय हिंदी कवि नागार्जुन	– संपादक प्रभाकर माचवे
4	नयी कविता की मानक कृतियाँ	– जीवन प्रकाश जोशी
5	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी मिथक काव्य : युगीन संदर्भ	– सविता गौड़
6	मार्क्सवाद और काव्य	– शिव कुमार मिश्र
7	तार सप्तक के कवियों की समाज–चेतना	– राजेंद्र कुमार
8	नागार्जुन	– सुरेश चंद्र त्यागी (संपादक)
9	नई कविता का आत्म संघर्ष	– मुक्तिबोध
10	आधुनिक कवियों की दार्शनिक पृष्ठभूमि	– डॉ० राजाराम सोनी
11	नयी कविता पुराख्यान और समकालीनता	– डॉ० एस०ए० सूर्य नारायण वर्मा
12	समकालीन कविता के सरोकार	– डॉ० गुरुचरण सिंह
13	समकालीन हिंदी कविता और लीलाधर जगूड़ी	– डॉ० शर्मिला सक्सेना
14	नागार्जुन का काव्य : एक पड़ताल	– श्री भगवान तिवारी
15	कविता की नयी अवधारणा	– डॉ० राजेंद्र मिश्र
16	हिंदी की प्रगतिशील कविता स्वरूप और प्रतिमान	– डॉ0 मृत्युंजय उपाध्याय
17	समकालीन हिंदी कविता की संवेदना	– डॉ० गोविंद रजनीश
18	नागार्जुन	– डॉ० प्रभाकर माचवे
19	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का काव्य	– डॉ० दौलत सिंह
20	रघुवीर सहाय का कृतित्व	– डॉ० शीला दानी
21	छायावादोत्तर कविता	– सं० अनिल राकेशी
22	नवगीत निकष	– सं० उमाशंकर तिवारी
23	काव्य कुसुमावली	– सुरेश कुमार जैन

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : चतुर्थ
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **नाटक और रंगमंच**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण तथा प्राचीन विधा है। आचार्य भरत के नाट्य चिन्तन से लेकर आधुनिक भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य चिन्तन के प्रसिद्ध चिन्तकों का अध्ययन नाटक के स्वरूप को समझने के लिए आवश्यक है। नाटक यथार्थ एवं कल्पना के मेलजोल से विलक्षण रूप धारण कर दृष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन तो प्रदान करता ही है साथ ही साथ अपने साध्य में दृश्य होने के कारण रंगमंच से भी सीधे जुड़ा हुआ है। हिंदी नाटक में ऐतिहासिकता के साथ–साथ जीवन की विसंगतियाँ और विद्रूपताएं भी दृष्टिगत होती हैं। इन सबको जानने–समझने के लिए इस विधा का अध्ययन आवश्यक है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1 नाटक एवं रंगमंच के इतिहास स्वरूप, भेद, अर्थ, एवं उद्देश्यों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होगा। 2 नाटक एवं रंगमंच की समाज के लिए उपयोगिता को समझ सकेगें। 3 साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा के वैचारिक आयामों को समझ सकेगें।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	नाटक तथा रंगमंच का स्वरूप एवं इतिहास, हिंदी रंगमंच का विकास। नाट्य भेद– रूपक–उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय) नाट्य विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन। हिंदी में नाटक का युगीन विकास क्रम	15
द्वितीय	रंगमंच के प्रकार, रंगशिल्प, रंग संप्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त) रंगमंच–लोक नाट्य (व्यावसायिक, कलात्मक), पारसी, प्रमुख सरकारी गैर सरकारी रंग संस्थाएँ, नुक्कड़ नाटक, रेडियो नाटक।	15
तृतीय	**नाटकों का अध्ययन** 1. अंधेर नगरी – भारतेंदु हरिश्चंद्र 2. स्कंदगुप्त – जयशंकर प्रसाद	15
चतुर्थ	**नाटकों का अध्ययन** 3. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश 4. अंधायुग – धर्मवीर भारती	15
पंचम	एकांकी का स्वरूप, इतिहास, भेद एवं विकास क्रम **एकांकी** – औरंगजेब की आखिरी रात – रामकुमार वर्मा जोंक – उपेन्द्र नाथ अश्क **द्रुतपाठ** :– विष्णु प्रभाकर, दया प्रकाश सिन्हा, लक्ष्मी नारायण लाल, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचंद्र माथुर, सुरेंद्र वर्मा, शंकर शेष, हबीब तनवीर।	15

व्याख्याएँ	2 X 7.5 = 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	2 X 15 = 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	3 X 5 = 15 अंक

अति लघुत्तरीय प्रश्न 10 X 1 = 10 अंक
योग = 70 अंक

नोट 1 :– इकाई 01, 02 एवं 05 से निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई 03 एवं 04 से व्याख्या एवं निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

2 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

03 : द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित सामान्य प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ : नाटक और रंगमंच

01	एक कंठ विषपायी	– दुष्यंत कुमार
02	सत्य हरिश्चंद्र	– भारतेंदु हरिश्चंद्र
03	कोणार्क	– जगदीश चंद्र माथुर
04	आठवां सर्ग	– सुरेंद्र वर्मा
05	चरनदास चोर	– हबीब तनवीर
06	संशय की एक रात	– नरेश मेहता
07	बकरी	– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
08	अंधेर नगरी	– भारतेंदु हरिश्चंद्र
09	स्कंदगुप्त	– जयशंकर प्रसाद
10	आषाढ़ का एक दिन	– मोहन राकेश
11	अंधायुग	– धर्मवीर भारती
12	प्रकाश और परछाई	– विष्णु प्रभाकर
13	प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन	– डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
14	प्रसाद का नाट्य कर्म	– डॉ0 सत्येंद्र कुमार तनेजा
15	प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना	– गोविंद चातक
16	हिंदी के प्रतिनिधि एकांकीकार	– डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना
17	हिंदी एकांकी : समग्र अध्ययन	– डॉ0 अब्दुर्रशीद ए0 शेख
18	आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच	– लक्ष्मीनारायण लाल
19	नाट्य विमर्श	– नर नारायण राय
20	स्तानिस्लव्सकी – भूमिका की तैयारी	– आचार्य विश्वनाथ मिश्र
21	स्तानिस्लव्सकी – भूमिका की संरचना	– आचार्य विश्वनाथ मिश्र
22	स्तानिस्लव्सकी – रचना की प्रक्रिया	– आचार्य विश्वनाथ मिश्र
23	भारतीय नाट्य रंगमंच	– आचार्य विश्वनाथ मिश्र
24	हिंदी नाटक : आज और कल	– वीणा गौतम

25	भारतीय और पाश्चात्य नाट्य सिद्धांत	– डॉ0 विश्वनाथ मिश्र
26	गीति नाट्य सिद्धांत और समीक्षा	– डॉ0 शिवशंकर कटारे
27	नाटक का रंग विधान	– डॉ0 विश्वनाथ मिश्र
28	मोहन राकेश और उनके नाटक	– डॉ0 पट्टण शेट्टी
29	एकांकी और एकांकीकार	– रामचरण महेंद्र
30	हिंदी नाटक आज और कल	– जयदेव तनेजा
31	राष्ट्रीय नवजागरण और प्रसाद के नाटक	– डॉ0 इंदुमति सिंह
32	नाटक का समाजशास्त्र	– वी0डी0 गुप्ता
33	हिंदी नाटक में समसामयिक परिवेश	– विपिन गुप्त
34	हिंदी नाटक नई दिशाएं नए प्रश्न	– गिरीश रस्तोगी
35	मोहन राकेश और उनके नाटक	– गिरीश रस्तोगी
36	हिंदी नाटक एवं रंगमंच	सं0 नेमिचंद्र जैन
37	प्रसाद के नाटक	– सिद्धनाथ कुमार
38	हिंदी नाटक : उद्भव और विकास	– डॉ0 दशरथ ओझा
39	नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान	– डॉ0 वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी
40	अंधायुग : पाठ और प्रदर्शन	– जयदेव तनेजा
41	दृश्य–अदृश्य (नाट्य विमर्श)	– नेमिचन्द्र जैन
42	अभिनय चिन्तन	– दिनेश खन्ना
43	प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन	– जगन्नाथ प्रसाद शर्मा

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : चतुर्थ
	विषय : हिंदी	
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **विशिष्ट साहित्य–धारा (भारतीय साहित्य)**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : भारतीय भाषाओं में हिंदी साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूपरचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिंदी के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1 राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य के वैचारिक आयामों को जानेंगे। 2 विभिन्न भाषाओं और बोलियों में साहित्यकारों और साहित्यिक विशेषताओं को जानेंगे। 3 साहित्य को व्यापक रूप में समझेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य / ऐच्छिक पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	भारतीय साहित्य की परिधि, भारतीय साहित्य में प्रतिबिंबित भारतीय संस्कृति तथा भारतीय साहित्य के मूलभूत मूल्य	15
द्वितीय	'हिंदी और बंगला' साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन	15
तृतीय	कालिदास (संस्कृत), मालंच (अनुवाद –नीरजा / फुलवारी) – रवींद्रनाथ ठाकुर (बंगला)	15
चतुर्थ	हयवदन – गिरीश कर्नाड (कन्नड)	15
पंचम	**द्रुतपाठ** : सुंदररामास्वामी (तमिल), के0 जी0 शंकर पिल्लै (मलयालम), पाश (पंजाबी), विजय तेंदुलकर (मराठी), जसमा ओड़न (गुजराती), पद्मा सचदेव (डोगरी)।	15

व्याख्याएँ	2 X 7.5 =	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	3 X 5 =	15 अंक
अति लघूत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
योग	=	70 अंक

नोट 01 :– इकाई प्रथम, द्वितीय से केवल निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई तृतीय, चतुर्थ से व्याख्यात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

03 द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय / अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग
1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)
अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।
मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

संदर्भ सूची :– विशिष्ट साहित्य–धारा (भारतीय साहित्य)

1	भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं	– परशुराम चतुर्वेदी
2	आधुनिक भारतीय चिंतन	– डॉ0 विश्वनाथ नरवणे
3	भारतीय चिंतन परंपरा	– के0 दामोदरन
4	भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएं	– डॉ0 रामविलास शर्मा
5	भारतीय साहित्य	– डॉ0 नगेंद्र
6	सूफीमत : साधना और साहित्य	– डॉ0 बलदेव उपाध्याय
7	भागवत संप्रदाय	– डॉ0 बलदेव उपाध्याय
8	भारतीय दर्शन	– डॉ0 बलदेव उपाध्याय
9	संस्कृत साहित्य का इतिहास	– डॉ0 बलदेव उपाध्याय
10	भारतीय साहित्य	– डॉ0 भोला शंकर व्यास
11	भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन	– ब्रजेश्वर शर्मा
12	भारतीय काव्यशास्त्र	– योगेंद्र प्रताप सिंह
13.	भारतीय साहित्य	– संपादक नगेंद्र
14	संस्कृति के चार अध्याय	– डॉ० देवराज
15	साहित्य और संस्कृति	– अमृतलाल नागर
16	राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य	– वीरभारत तलवार
17	विश्व साहित्य शास्त्र	– डॉ0 नगेंद्र (संपादक)
18	भारतीय भाषाएँ और राष्ट्रीय अस्मिता	– मुकुंद द्विवेदी (संपादक)
19	प्राचीन भारतीय साहित्य मीमांसा	– अशोक केलकर

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : चतुर्थ
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **विशिष्ट साहित्य–धारा (कौरवी लोक साहित्य)**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : हिंदी जगत में अमूल्य कौरवी साहित्य संपदा विद्यमान है। इसके संकलन, संपादन, सर्वेक्षण, प्रकाशन के माध्यम से ही मूल राष्ट्रीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है। इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को कौरवी लोक साहित्य से परिचित कराना है। कौरवी बोली, मानक हिंदी के मूल में निहित है। इसलिए कौरवी बोली और उसके साहित्य का अध्ययन हिंदी अध्येताओं के लिए महत्वपूर्ण है, साथ ही विद्यार्थी बोली में अध्ययन के माध्यम से श्रुति परंपरा से चले आए साहित्य की सांस्कृतिक विशिष्टताओं को भी इस पाठ्यक्रम के माध्यम से समझ सकेंगे। साथ ही कौरवी बोली में रचना करने वाले साहित्यकारों के वैचारिक दृष्टिकोण को भी विद्यार्थी समझ सकेंगे।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. विद्यार्थी लोक समाज और लोक साहित्य के संबंध को समझेंगे। 2. भाषाई क्षेत्र की व्याकरणिक व्यवहारिक और साहित्यिक विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे। 3. लोक अनुभव के महत्व को व्यापक रूप में जानेंगे। 4 लोक समाज और लोक साहित्य को समझ पाएंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य / ऐच्छिक पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	**लोक जीवन** : लोक संस्कृति और लोक समाज (रीति रिवाज, लोकनीति, लोकमानस, लोकमान्यताएं)।	10
द्वितीय	**लोक साहित्य** : अवधारणा, लोक साहित्य के रूप, परिचय, लोकविधाएँ – लोकगीत, लोककथाएँ, लोकनाट्य (स्वांग), लोकगाथाएं, कौरवी लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे आदि। कौरवी बोली : परिचय, क्षेत्र तथा सीमाएं तथा उच्चारणगत विशेषताएँ, कौरवी के प्रमुख रचनाकार तथा उनकी रचनाएं।	15
तृतीय	**पाठ्य ग्रंथ** : गामेल्लाभास (दोहा–संग्रह) – डॉ0 कृष्णचंद्र शर्मा, लोकदीप प्रकाशन मेरठ, प्रारम्भिक 100 दोहे। गंगासागर – (मंगलाचरण – श्रीगणपति के .... यकीन लाते हैं।) – (विराग के पद – पागल क्यूं गालिफ .... कज़ा खाती है।) – (मन प्रबोधन के पद – 88 पागल हम सै .... सिर धर तू।।) – (89 मन भरै तो .... अब धर तू।।) – (90 अरे पागल, अरे .... सै जागता लहना।) लोक जीवन के स्वर (गीत–संग्रह) – डॉ0 कृष्णचंद्र शर्मा, कुरूलोक संस्थान, रामवाटिका, शिवाजी मार्ग, मेरठ (सावन के गीत (प्रारम्भिक 25), टेहले के गीत (प्रारम्भिक 15), धार्मिक गीत (प्रारम्भिक 15)। हिंडन अर पेली काई (कविता संग्रह) : हरपाल सिंह अरूष, सहज प्रकाशन मुजफ्फरनगर।	20
चतुर्थ	सतलड़ा (एकांकी–संग्रह) – डॉ० हरद्वारी लाल शर्मा, कुरूलोक संस्थान, मेरठ लोग : गिरिराज किशोर, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।	20

पंचम	द्रुतपाठ –गंगादास, शंकरदास, घीसाराम, मटरूलाल अत्तार, पृथ्वीसिंह बेधड़क, शोभाराम प्रेमी, चंदर बादी, पं हरिवंश लाल, उस्ताद बुनियाद अली	10

व्याख्याएँ	2 X 7.5 =	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	3 X 5 =	15 अंक
अति लघुत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक

नोट 01 :– इकाई संख्या 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। व्याख्या केवल इकाई 03 (गामेल्लभास (दोहा–संग्रह), लोक जीवन के स्वर (गीत–संग्रह)), हिंडन अर पेली काई (कविता संग्रह) से ही पूछी जाएगी।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षाअध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

संदर्भ सूची :– विशिष्ट साहित्य–धारा (कौरवी लोक साहित्य)

1	मयराष्ट्र मानस	– डॉ0 कृष्ण चंद्र शर्मा (संपादक)
2	खड़ी बोली की साहित्यिक विधाएं एवं रचनाकार (संदर्भ : मेरठ मंडल)	– प्रो0 नवीन चंद्र लोहनी
3	कौरवी लोक साहित्य	– प्रो0 नवीन चंद्र लोहनी
4	लोकवार्ता विज्ञान (भाग 1 व 2)	– डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा
5	लोक जीवन के स्वर	– डॉ0 कृष्णचंद्र शर्मा
6	लोक साहित्य	– डॉ0 सुरेश चंद्र त्यागी (संपादक)
7	कौरवी शब्द कोश	– डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा/डॉ0 कृष्णचंद्र शर्मा/डॉ0 च
8	संत गंगादास और उनका काव्य	– डॉ0 ब्रजपाल सिंह संत/डॉ0 जगन्नाथ शर्मा 'हंस'
9	कुरू भारती (बोली अंक)	– डॉ0 कृष्ण चंद्र शर्मा (संपादक)
10	कुरू भारती (लोककथा अंक)	– डॉ0 कृष्ण चंद्र शर्मा (संपादक)
11	उत्तर मध्य क्षेत्र की लोक संस्कृति	– जयप्रकाश राय/डॉ0 योगेंद्र प्रताप सिंह
12	लोक साहित्य	– सुरेश चंद्र त्यागी (संपादक)
13	लोक साहित्य : स्वरूप और मूल्याकन	– डॉ0 श्रीराम शर्मा
14	लोक साहित्य	– बाबू राव देसाई
15	कौरवी लोक साहित्य	– डॉ0 सुरेश चंद्र शर्मा, पंकज
16	लोक भाषा	– डॉ0 कैलाश चंद्र भाटिया
17	ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन	– डॉ0 सत्येंद्र
18	लोक साहित्य	– इंद्रदेव सिंह
19	लोक साहित्य	– डॉ0 इंदु यादव
20	लोक साहित्य विज्ञान	– डॉ0 सत्येंद्र
21	खड़ी बोली का लोक साहित्य	– डॉ0 सत्यागुप्त
22	अवधी लोक साहित्य	– डॉ0 सरोजनी रोहतगी
23	कन्नौजी लोक साहित्य	– डॉ0 संतराम अनिल

24	हिंदी का प्रादेशिक लोक साहित्यशास्त्र	– डॉ0 नंदलाल कल्ला
25	लोक साहित्य और संस्कार संस्कृति	– जयनारायण कौशिक
26	लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन	– डॉ0 छोटेलाल बहरदार
27	राजस्थानी लोकनाट्य	– डॉ0 सोहनदास चारण
28	लोक साहित्य का शास्त्रीय अनुशीलन	– डॉ0 महेश गुप्त
29	लोक संस्कृति और लोक साहित्य	– डॉ0 जयनारायण कौशिक
30	कौरवी प्रदेश की लोक संस्कृति	– डॉ0 कविता त्यागी
31	खड़ीबोली का लोक साहित्य	– डॉ0 सत्या गुप्ता
32	भाषा का लोकपक्ष	– डॉ0 रामस्वार्थ ठाकुर
33	लोक संस्कृति के शिखर	– सवित्री परमार
34	लोकोक्ति कोश	– हरिवंश राय शर्मा

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : चतुर्थ
	विषय : हिंदी	
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : <u>विशिष्ट साहित्य–धारा</u> <u>प्रवासी हिंदी साहित्य</u>	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना सदैव बनी रही है। हमारी संस्कृति में सभी के विचारों एवं भावों को पूर्ण सम्मान एवं स्थान मिला है। स्वतन्त्रता से पूर्व कुछ भारतीय विभिन्न गतिविधियों के चलते विदेशों में चले गए तथा वहीं बस गए परन्तु उन्होंने अपनी संस्कृति, वेशभूषा एवं भाषा को नहीं छोड़ा। इसी की छाया उनकी साहित्यिक रचनाओं में दिखाई पड़ती है। इस प्रश्न पत्र के माध्यम से विदेशों में बसे प्रवासी भारतीय साहित्यकारों के साहित्य का छात्रों को ज्ञान कराना है। (इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस विधा के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है)

पाठ्यक्रम परिणाम : 1 भारत के बाहर रचे जाने वाले हिंदी साहित्य के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा। 2 विदेशों में हिंदी की स्थिति को समझ पाएंगे। 3 हिंदी साहित्य के माध्यम से अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रभावों को समझ पाएंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य / ऐच्छिक पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	प्रवासी तथा भारतवंशी समाज : इतिहास एवं परंपरा। प्रवासी हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, प्रवासी हिंदी साहित्य की प्रमुख रचनाएँ / विधाएँ, पत्र–पत्रिकाएँ। प्रवासी हिंदी साहित्य की विशेषताएं : क्षेत्रीय विशेषताएं, परिभाषा, संसर्ग से नई शब्दावली, व्याकरण के नए रूप।	10
द्वितीय	**उपन्यास** — **उपन्यासकार** लहरों की बेटी — अभिमन्यु अनंत (मॉरीशस) **नाटक** — **नाटककार** बेगम समरू — सत्येन्द्र श्रीवास्तव (ब्रिटेन) **डायरी** — **रचनाकार** दुनिया रंग–बिरंगी — ओंकार नाथ श्रीवास्तव (ब्रिटेन)	20
तृतीय	**कवि** — **कविता** डॉ० अंजना संधीर (अमेरिका) – अमेरिका तुझे क्या कहूँ ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर' (मॉरीशस) – महात्मा गांधी की जय वेद प्रकाश 'वटुक' (अमेरिका) – गाँव गए कल कमला प्रसाद मिश्र (फीजी) – क्या मैं परदेसी हूँ उषा वर्मा (ब्रिटेन) – पीछे देखना संभव मार्टिन हरिदत्त लछमन (सूरीनाम) – वृक्ष की टहनी पर हरिशंकर आदेश – कहे पुकार के मोहन राणा (ब्रिटेन) – बसंत मुनिश्वरलाल चिंतामणि (मॉरीशस) – मेरी हिंदी भाषा	15

चतुर्थ	**कहानी** **कहानीकार** **कहानी** **कहानीकार** मेहमान – जोगिंदर सिंह कंवल (फीजी) तलाश – सुषम बेदी (अमेरिका) वह रात – उषा राजे सक्सेना (ब्रिटेन), आस्था – हेमराज सुंदर (मॉरीशस), कब्र का मुनाफा – तेजेन्द्र शर्मा (ब्रिटेन), जड़ों से कटने पर – कृष्ण बिहारी (अबूधाबी), गोल्फ – जया वर्मा (ब्रिटेन), छुट्टी का दिन – लक्ष्मीधर मालवीय (जापान)	15
पंचम	द्रुतपाठ– प्रवासी साहित्य की विविध विधाएं और नेट पत्रिकाएं – अनुभूति, अभिव्यक्ति, साहित्य कुंज, गर्भनाल, भारत दर्शन, लेखनी तथा अन्य। डॉ0 कृष्ण कुमार, दिव्या माथुर, पूर्णिमा वर्मन, सुरेश चन्द शुक्ल 'आलोक', उषा प्रियंवदा।	15

व्याख्याएँ	–	2 X 7.5	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	2 X 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	3 X 5	=	15 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	=	10 अंक
योग	–			70 अंक

नोट 01 व्याख्या इकाई संख्या 02 एवं 03 (उपन्यास एवं कविताओं) में से ही पूछी जाएगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01 से 04 तक पूछे जाएंगे।

02 लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

03 द्रुतपाठ के लिए चयनित विधाओं, रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित सामान्य प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

संदर्भ सूची :– विशिष्ट साहित्य–धारा (प्रवासी हिंदी साहित्य)

1 फीजी में हिंदी का स्वरूप और विकास – विमलेश कांति वर्मा
2 अभिमन्यु अनत – कमल किशोर गोयनका
3 हिंदी के यूरोपीय विद्वान : व्यक्तित्व और कृतित्व – मुरलीधर श्रीवास्तव
4 मॉरीशस के भारतीयों का इतिहास – के हजारी सिंह
5 विश्व दर्पण : अंतर्राष्ट्रीय कविता संग्रह – सं. बलवंत सिंह नौबत सिंह
6 फीजी में प्रवासी भारतीय – जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
7 फीजी के राष्ट्रीय कवि कमला प्रसाद मिश्र की कविताएँ – सं. सुरेश ऋतुपर्ण
8 विश्व हिंदी के भगीरथ – डॉ0 भक्त राम शर्मा
9 हिंदी की विश्व यात्रा – डॉ0 सुरेश ऋतुपर्ण
10 ब्रिटेन में हिंदी रचनाकार (ब्रिटेन के बारे में भारत का प्रकाशन) – सं. राधाकांत भारती
11 विदेशी विद्वानों का हिंदी प्रेम – जगदीश प्रसाद बरनावाल कुंद
12 ब्रिटेन में हिंदी – उषा राजे सक्सेना
13 देह की कीमत : कहानी संग्रह – तेजेंद्र शर्मा

14	फीजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य	– विमलेश कांति वर्मा
15	मिट्टी की सुगंध	– सं. उषा राजे सक्सेना
16	कहीं क्षितिज कहीं लहरें	– डॉ0 सतेंद्र श्रीवास्तव
17	कोई तो सुनेगा : काव्य संग्रह	– उषा वर्मा
18	गगनांचल : विश्व हिंदी अंक	– डॉ0 कन्हैया लाल नंदन
19	चेतना का आत्मसंघर्ष : हिंदी की इक्कीसवीं सदी	– सं. मंडल : डॉ0 सुरेंद्र, गंभीर,
20	हिंदी उत्सव ग्रंथ : आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन, न्यूयॉर्क	– डॉ0 अंजना संधीर, डॉ0 सुषम बेदी, – डॉ0 पी0 जयरामन
20	स्मारिका : सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन	– सं. मंडल : डॉ0 कमल किशोर गोयनका, – श्रीमती चित्रा मुद्गल, डॉ0 भगवान सिंह, अनुराग चतुर्वेदी
21	प्रतिनिधि अप्रवासी हिंदी कहानियाँ	– संपादक हिमांशु जोशी
22	मॉरीशसीय हिंदी साहित्य	गुनीश्वरलाल चिंतामणि
23	विदेशों में हिंदी	– इंद्रदेव भोला
24	मॉरीशस का हिंदी कथा साहित्य एक सांस्कृतिक अध्ययन	– डॉ0 कृष्ण कुमार झा
25	मॉरीशस लोक साहित्य और संस्कृति	– प्रह्लाद रामशरण
26	भारतीय वांग्मय में मॉरीशस की संस्कृति	– प्रह्लाद रामशरण
27	मॉरीशस का भोजपुरी साहित्य एवं भारतीय संस्कृति (शोध)	– डॉ0 उदय नारायण गंगू
28	विलायत में भारतीय संस्थाएं	– रमेश वैश्य मुरादाबादी
29	गंगा से मिसीसिपी तक	– डॉ0 श्याम नारायण शुक्ल
30	मॉरीशस में भारतीयों का इतिहास	– के0 हजारी सिंह
31	शतदल	– हरिशंकर आदेश
32	सूरीनाम का सृजनात्मक हिंदी साहित्य	– पुष्पिता अवस्थी
33	हिंदी प्रवासी साहित्य (तीन खण्ड)	– कमल किशोर गोयनका
34	गिरमिटिया मजदूरों का प्रवासन	– डॉ० सजिल कुमार राय
35	मध्य और पूर्वी यूरोप में हिंदी	– सं० इमरै बंगा
36	देशान्तर (प्रवासी भारतीयों की कविताएँ)	– सं० उषा राजे सक्सेना
36	देशान्तर (प्रवासी भारतीयों की कहानियाँ)	– सं० तेजेंद्र शर्मा
37	प्रवासी हिंदी साहित्य और ब्रिटेन	– डॉ० राकेश बी० दुबे
38	प्रवासी हिंदी साहित्य : स्वरूप और अवधारणा	– डॉ०वत्ता कोल्हारे
39	प्रवासी हिंदी साहित्य दशा एवं दिशा	– प्रो० प्रदीप श्रीधर
40	प्रवासी हिंदी कथा साहित्य	– केदार कुमार मंडल
41	प्रवासी पुत्र	– पद्मेश गुप्त
42	प्रवासी हिंदी साहित्य – विविध आयाम	– डॉ० रमा
43	प्रवासी साहित्य का इतिहास, सिद्धांत एवं विवेचना	– डॉ० बापूराव देसाई
44	प्रवासी लेखन नयी जमीन नया आसमान	– अनिल जोशी
45	प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानी	– डॉ० सुरेन्द्र गंभीर
46	प्रवासी साहित्य – भाषा और समाज	– सं० डॉ० मोनिका देवी
47	सुधा ओम ढींगरा – रचनात्मकता की दिशाएं	– वंदना गुप्ता

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : चतुर्थ
	विषय : हिंदी	
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **विशिष्ट साहित्य–धारा (प्राचीन भाषा–साहित्य) संस्कृत**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : संस्कृत को देव भाषा कहा गया है। प्राचीन भारत के सभी ग्रंथों की भाषा संस्कृत में ही है। संस्कृत का ज्ञान हमें अपनी संस्कृति से जोड़े रखता है। विश्व का कोई ऐसा ज्ञान अथवा विज्ञान नहीं है जिसका संस्कृत में वर्णन नहीं हुआ हो। संस्कृत का अध्ययन संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार हेतु आवश्यक एवं प्रासंगिक है।
(इस पाठ्यक्रम में रचनाकारों और उनकी रचनाओं के साथ–साथ, रचनाकर्म, एवं उनकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है)

पाठ्यक्रम परिणाम : 1 प्राचीन भारतीय साहित्यिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं को जानेंगे। 2 प्राचीन साहित्य के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक विशेषताओं को समझेंगे। 3 भारतीय साहित्य को व्यापकता में जानेंगे। 4 एक समृद्ध साहित्यिक परम्परा से जुड़ेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य / ऐच्छिक पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय (केवल वे ही छात्र यह प्रश्न पत्र ले सकते हैं जिन्होंने बी0ए0 अथवा समकक्ष परीक्षा संस्कृत में उत्तीर्ण न की हो।)	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	कुमारसंभव– कालिदास (पंचम सर्ग)	15
द्वितीय	कादंबरी (शूद्रक वर्णन)– बाण (विंध्यावटी वर्णन तक अर्थात् कथामुख के आरंभ से पुष्पत्पपि विंध्यावटी नाम तक)	15
तृतीय	अभिज्ञानशाकुंतलम् – कालिदास (केवल चतुर्थ अंक)	15
चतुर्थ	संस्कृत साहित्य का इतिहास (सामान्य परिचय मात्र)।	15
पंचम	पाठ्यग्रंथों से संबंधित संधि और समास पर प्रश्न।	15

व्याख्याएँ –	2 X 7.5	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न –	2 X 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न–	3 X 5	=	15 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न–	10 X 1	=	10 अंक
योग			70 अंक

नोट 01 :– इकाई 01 से 03 तक व्याख्या पूछी जाएगी। इकाई संख्या 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई संख्या 05 से लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग
1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)
अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।
मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन/प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

संदर्भ सूची :– विशिष्ट साहित्य–धारा (संस्कृत)

1 संस्कृत साहित्य का इतिहास – ए०बी० कीथ
2 संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय
3 संस्कृत कवि दर्शन – डॉ० भोला शंकर व्यास
4 हायर संस्कृत ग्रामर (हिंदी अनुवाद) – एन०आर० काले
5 संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – पं० चन्द्रशेखर पाण्डेय/डॉ० शांतिकुमार नानूराम व्यास
6 संस्कृत व्यावरण – ह्विटने
7 संस्कृत साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास – रामविलास चौधरी
8 संस्कृत साहित्य में नीतिपरक काव्य एक विवेचनात्मक अध्ययन – अनूपकुमार
9 संस्कृत साहित्य का इतिहास – नागरी प्रचारिणी सभा
10 राष्ट्रीय कवि कालिदास – हजारी प्रसाद द्विवेदी
11 कालिदास हिज आई एण्ड कल्चर – रामगोपाल
12 महाकवि कालिदास की कृतियाँ – राम जी उपाध्याय
13 कालिदास मीमांसा – प्रो० शैलेन्द्र कुमार शर्मा

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : चतुर्थ
	विषय : हिंदी	
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **विशिष्ट साहित्य–धारा (प्राचीन भाषा–साहित्य) प्राकृत–अपभ्रंश**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्राचीन भारत में संस्कृत पठन–पाठन की मुख्य भाषा रही। संस्कृत पहले वैदिक स्वरूप तत्पश्चात लौकिक स्वरूप में बदलती गई। गति के इसी क्रम में बौद्ध धर्म का उत्थान हुआ एवं संस्कृत का स्थान पालि भाषा ने ले लिया। पालि के पश्चात भाषा का स्वरूप परिवर्तित होता गया तथा प्राकृत एवं अपभ्रंश का स्वरूप सामने आया जो कि एक अध्ययन का विषय है। (इस पाठ्यक्रम में रचनाकारों, रचनायें, रचनाकर्म, एवं उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है)

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. भारतीय आर्य भाषाओं के विकास को समझ पाएंगे। 2. भारतीय आर्य भाषा के विभिन्न काल खण्डों में रचित साहित्य से परिचित होंगे। 3. भारतीय इतिहास में एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा से जुड़ेंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य / ऐच्छिक पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	कर्पूरमंजरी (सम्पूर्ण) – राजशेखर	15
द्वितीय	पउम चरिउ (प्रथम भाग) – स्वयंभू (केवल बारहवीं व तेरहवीं)	15
तृतीय	प्राकृत विमर्श (वर्ष 1974 संस्करण) – सरयू प्रसाद अग्रवाल प्रकाशन केंद्र, रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ **उद्धरण**– (1) गाथासप्तशती (3) रावण व हो (5) समराइच्चकहा (7) अभिज्ञान शाकुंतलम् (11) रत्नावली (13) मृच्छकटिकम्।	15
चतुर्थ	प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय	15
पंचम	प्राकृत तथा अपभ्रंश शब्दों के रूपों का ज्ञान	15

व्याख्याएँ	–	2 X 7.5	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	2 X 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	3 X 5	=	15 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	=	10 अंक
योग	–			70 अंक

नोट 01 :– इकाई 01 से 03 तक व्याख्या पूछी जाएगी। इकाई संख्या 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई संख्या 05 से लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

नोट 02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन / विशिष्ट व्याख्यान / फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग
1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)
अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।
मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन / प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

संदर्भ सूची :– संस्कृत एवं प्राकृत–अपभ्रंश

1	संस्कृत साहित्य का इतिहास	– ए0 वी0 कीथ
2	संस्कृत साहित्य का इतिहास	– बलदेव उपाध्याय
3	संस्कृत कवि दर्शन	– डॉ0 भोलाशंकर व्यास
4	हायर संस्कृत ग्रामर (हिंदी अनुवाद)	– एन0 आर0 काले
5	संस्कृत व्याकरण	– ह्विटने
6	संस्कृत साहित्य की रूपरेखा	– पं0 चंद्रशेखर पांडेय / डॉ0 शांतिकुमार नानूराम व्यास
7	अपभ्रंश भाषा का पारिभाषिक कोश	– डॉ0 आदित्य प्रचंडिया
8	प्राकृत तथा उसका साहित्य	– डॉ0 हरदेव बाहरी
9	अपभ्रंश साहित्य	– डॉ0 हरवंश कोछड़
10	प्राकृत–अपभ्रंश साहित्य और उसका हिंदी पर प्रभाव	– डॉ0 रामसिंह तोमर
11	तुलनात्मक प्राकृत – पालि–अपभ्रंश व्याकरण	– डॉ0 सुकुमार सेन
12	प्राकृत साहित्य का इतिहास	– जगदीश चंद्र जैन
13	अपभ्रंश भाषा का अध्ययन	– डॉ0 वीरेंद्र श्रीवास्तव
14	हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग	– डॉ0 नामवर सिंह
15	पुरानी हिंदी	– चंद्रधर शर्मा गुलेरी
16	हिंदी साहित्य का आदिकाल	– हजारी प्रसाद द्विवेदी
17	अपभ्रंश पीठिका	– डॉ0 सुमन राजे
18	प्राकृत हिंदी शब्दकोश	– उदय चंद जैन
19	प्राकृत भाषाओं का व्याकरण	– हेमचंद्र जोशी (अनु0)

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : चतुर्थ
	विषय : हिंदी	
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिंदी आलोचना**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : आलोचना किसी वस्तु या विषय की उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उसके गुण दोषों एवं उपयुक्तता का विवेचन करने वाली साहित्यिक विधा है। इसमें अध्ययन, विश्लेषण, मूल्यांकन एवं अर्थ निगमन की प्रक्रिया सम्मलित है। हिंदी आलोचना का प्रारम्भ 19वीं सदी के उत्तरार्ध में भारतेन्दु युग से ही माना जाता है। आलोचना का कार्य है किसी साहित्यिक रचना की अच्छी तरह परीक्षा करके उसके रूप, गुण और अर्थवत्ता का निर्धारण करना। जिसके संबंध में विभिन्न आलोचकों के मत का अध्ययन हमें इस प्रश्न पत्र के माध्यम से करना है। ताकि विभिन्न आलोचकों के मत का छात्रों को ज्ञान हो सके साथ ही वें साहित्य की विभिन्न मतों के आधार पर समीक्षा कर सकें।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1 साहित्यिक कृति और आलोचनात्मक दृष्टिकोण के संबंध को समझ पाएंगे। 2 विभिन्न आलोचनात्मक दृष्टिकोणों से परिचित हो पाएंगे। 3 अच्छे साहित्य की परख करने में सक्षम होंगे। 4 समय-समय पर हिंदी साहित्य में जो वैचारिक नयापन आया है उसे जान पाएंगे।

क्रेडिट : 5	अनिवार्य पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	आलोचना का उद्भव एवं विकास, पाश्चात्य आलोचना, भारतेन्दु युगीन आलोचना।	15
द्वितीय	आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी की साहित्यिक मान्यताएँ	15
तृतीय	नंद दुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा की साहित्यिक मान्यताएँ	15
चतुर्थ	अज्ञेय, नगेंद्र एवं नामवर सिंह की साहित्यिक मान्यताएँ	15
पंचम	द्रुतपाठ– शिवदान सिंह चौहान, विजयदेव नारायण साही, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', नलिन विलोचन शर्मा, शमशेर बहादुर सिंह, विश्वनाथ त्रिपाठी, मैनेजर पाण्डेय ।	15

द्रुतपाठ हेतु चयनित रचनाकारों में से केवल लघु उत्तरीय प्रश्न ही पूछे जाएंगे।

निबंधात्मक / आलोचनात्मक प्रश्न	3 x 13 =	39 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	4 x 5 =	20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	11 x 1 =	11 अंक
योग	=	70 अंक

नोट 01 :– इकाई 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन / विशिष्ट व्याख्यान / फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : सेमिनार पत्र लेखन / प्रस्तुति, क्विज टेस्ट, आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता : इन्टरमीडिएट तथा स्नातक स्तर पर हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में उत्तीर्ण किया हो।

<u>संदर्भ सूची :– हिंदी आलोचना</u>

1 समकालीन हिंदी समीक्षा – हुकुमचंद राजपाल
2 हिंदी सैद्धांतिक आलोचना – डॉ0 रूपकिशोर मिश्र
3 आलोचना प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ0 आनंद प्रकाश दीक्षित
4 शुक्लोत्तर हिंदी समीक्षा और डॉ0 नगेंद्र – डॉ0 विजय कुमार वेदालंकार
5 हिंदी समीक्षा स्वरूप और संदर्भ – डॉ0 रामदरश मिश्र
6 हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार – कृष्णदत्त पालीवाल
7 हिंदी आलोचना का सैद्धांतिक आधार – कृष्णदत्त पालीवाल
8 नामवर सिंह आलोचना की दूसरी परंपरा – संपादक कमला प्रसाद
9 आलोचना के मान – डॉ0 शिवदान सिंह चौहान
10 कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ – डॉ0 नगेंद्र
11 साहित्य का इतिहास दर्शन – आचार्य नलिन विलोचन शर्मा
12 महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – डॉ0 रामविलास शर्मा
13 मार्क्सवादी आलोचना – डॉ० शिवदान सिंह चौहान
14 आलोचना के सिद्धांत – शिवदान सिंह चौहान
15 हिंदी साहित्य की जनवादी परंपरा – प्रकाश चंद्र गुप्त
16 प्रगतिशील साहित्य के मानदंड – रांगेय राघव
17 आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – नामवर सिंह
18 हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि – विश्वंभर नाथ उपाध्याय
19 मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत – शिवकुमार मिश्रा
20 मानव मूल्य और साहित्य – धर्मवीर भारती
21 नई कविता के प्रतिमान – लक्ष्मीकांत वर्मा
22 हिंदी साहित्य और संवदेना का विकास – रामस्वरुप चतुर्वेदी
23 साहित्य और साहित्यकार का दायित्व – विजय देव नारायण साही
24 संस्कृति का दार्शनिक विवेचन – देवराज
25 आधुनिकता और हिंदी साहित्य – इंद्रनाथ मदान
26 हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह
27 हिंदी आलोचना बीसवीं शताब्दी – निर्मला जैन
28 आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना – चंद्रकांत बांदिवडेकर
29 आलोचना की पहली किताब – नंद्र किशोर आचार्य, विष्णु खरे
30 नई कविता का परिप्रेक्ष्य – परमानंद श्रीवास्तव
31 हिंदी आलोचना : कुछ कहानियाँ, कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी
32 हिंदी कविता का समकालीन परिदृश्य – हरदयाल
33 आधुनिक हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
34 हिंदी आलोचना का विकास – नंद किशोर नवल
35 हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार – रामचंद्र तिवारी
36 आ० रामचंद्र शुक्ल आलोचना के नए मानदंड – भवदेव पांडेय

37	आ० रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना	– रामविलास शर्मा
38	आलोचक के मुख से	– डॉ० नामवर सिंह
39	आलोचना और विचार धारा	– डॉ० नामवर सिंह
40	आलोचना की सामाजिकता	– मैनेजर पांडेय
41	भारत : इतिहास और संस्कृति	– गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
42	भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ	– डॉ० रामविलास शर्मा
43	भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ	– डॉ० रामविलास शर्मा
44	हिंदी आलोचना की बीसवी सदी	– निर्मला जैन
45	वाद विवाद संवाद	– डॉ० नामवर सिंह

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : प्रथम
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड : QA010701T	पाठ्यक्रम शीर्षक : **सामान्य हिंदी**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : गैर हिंदी स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम

सामान्य हिंदी का ज्ञान सभी विषयों से संबंधित विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है। इस प्रश्न पत्र में हिंदी से संबंधित सभी बिन्दुओं पर थोड़ा बहुत विमर्श किया गया है। ताकि सभी विद्यार्थी (विभिन्न विषयों से संबंधित) हिंदी के व्याकरण और हिंदी लेखन की विभिन्न विधाओं को समझ सकें। साथ ही साहित्य से इतर भी हिंदी का प्रयोग समझ सकें। इस पाठ्यक्रम में हिंदी की इन विशेषताओं पर चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. हिंदी से इतर विषय में अध्ययनरत विद्यार्थी हिंदी का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे। 2. भाषाई परिपक्वता प्राप्त करेंगे। 3. अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ेगी। 4. तकनीकी क्षेत्र में हिंदी की उपयोगिता जान पाएंगे।

क्रेडिट : 4	ऐच्छिक पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	**हिंदी व्याकरण** संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, पुरूष, वचन, लिंग, कारक, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, शब्द प्रयोग – पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी शब्द, लोकोक्ति एवं मुहावरे, वाक्यांश के लिए एक शब्द	12
द्वितीय	**अनुवाद** अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि, कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद। अनुवाद का अन्य क्षेत्र : वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, विधि, साहित्य, कार्यालयी।	12
तृतीय	**हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन –** बोली, भाषा, ध्वनि, शब्द, अर्थ, पद, वाक्य, साहित्यिक विधाएं – कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, संस्मरण, रिर्पोताज, रेखाचित्र, डायरी, यात्रावृतान्त, आत्मकथा, जीवनी, समीक्षा आदि	12
चतुर्थ	**कामकाजी हिन्दी** हिंदी के विभिन्न रूप–सर्जनात्मक भाषा, मानक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, संपर्क भाषा, मातृ भाषा, कार्यालयी हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, टिप्पण, संक्षेपण, पल्लवन।	12
पंचम	**जनसंचार माध्यमों में हिंदी लेखन** रिपोर्ट लेखन, संपादकीय, अग्रलेख, लघु टिप्पणियाँ। फीचर लेखन, विविध दैनिकों, रेडियो चैनलों, इंटरनेट, मोबाइल, फिल्मों, टीवी चैनलों में प्रयुक्त हिन्दी का स्वरूप, जनसंपर्क एवं विज्ञापनों में हिन्दी।	12

निबंधात्मक प्रश्न	3 X 15	= 45 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	3 X 5	= 15 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1	= 10 अंक
योग		= 70 अंक

नोट :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।
शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षाअध्यापन / विशिष्ट व्याख्यान / फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग
1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)
अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।
मूल्यांकन प्रक्रिया : आंतरिक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम हेतु अर्हता :

सन्दर्भ ग्रन्थ : सामान्य हिंदी

1 अनुवाद विमर्श एक अध्याय – डॉ० विचार दास सुमन
2 अनुवाद क्या है – राजमल बोरा
3 प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे
4 व्यावहारिक हिंदी और स्वरूप – कृष्ण कुमार गोस्वामी
5 साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ – डॉ० कैलाश चन्द्र भाटिया
6 हिंदी गद्य विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
7 हिंदी भाषा – डॉ० कैलाश चन्द्र भाटिया
8 हिंदी – दशा और दिशा – प्रभाकर श्रोत्रिय
9 हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ – विनोद गोदरे
10 पत्रकारिता की विभिन्न विधाएँ – डॉ० निशांत सिंह
11 सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण और रचना – डॉ० अरविन्द कुमार
12 हिंदी व्याकरण – कामता प्रसाद गुरू
13 व्याकरण प्रदीप – रामदेव एम०ए०
14 हिंदी व्याकरण – काशीराम शर्मा
15 हिंदी का सामान्य ज्ञान (भाग 1, 2) – हरदेव बाहरी

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : प्रथम	सेमेस्टर : द्वितीय
विषय : हिंदी		
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **कोश विज्ञान**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : गैर हिंदी स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम

भाषा वैचारिक और भावात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। शब्द भाषा को समृद्ध और व्यापक बनाते हैं। किसी भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता उसकी शब्द संपदा पर ही निर्भर है। इसलिए भाषा को संरक्षित रखने के लिए उसकी शब्द संपदा को संरक्षित करना आवश्यक है। कोश विज्ञान शब्द संग्रह का एक व्यवस्थित ज्ञान विद्यार्थी को प्रदान करता है और भाषाई संरक्षण और व्यापकता के प्रति विद्यार्थी को सजग बनाता है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. भाषाई शब्द सम्पदा के महत्व को जानेंगे। 2. भाषा और शब्द संरक्षण की ओर प्रेरित होंगे। 3. शब्दों के संरक्षण की वैज्ञानिक पद्धति को जानेंगे।

क्रेडिट : 4	ऐच्छिक पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	कोश, परिभाषा और स्वरूप। कोशविज्ञान और अन्य विषयों का संबंध : कोश विज्ञान और स्वनविज्ञान, व्याकरण, व्युत्पत्तिशास्त्र और अर्थविज्ञान, कोश विज्ञान की उपयोगिता एवं उपादेयता।	12
द्वितीय	प्राचीन भारतीय कोश परंपरा, पाश्चात्य कोश परंपरा, निघंटु, हिंदी कोश साहित्य का इतिहास। हिंदी के प्रमुख कोश और कोशकार।	12
तृतीय	**कोश के भेद**–समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोश, एककालिक और कालक्रमिक कोश, विषय कोश, पारिभाषिक कोश, व्युत्पत्तिकोश, समांतर कोश, अध्येताकोश, विश्वकोश, बोलीकोश।	12
चतुर्थ	कोश–निर्माण की प्रक्रिया, सामग्री संकलन, प्रविष्टिक्रम, व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, व्युत्पत्ति, अर्थ (पर्याय, व्याख्या, चित्र) प्रयोग, उप– प्रविष्टियाँ, संक्षिप्तियाँ, संदर्भ और प्रति संदर्भ। रूप, अर्थ, संबंध, अनेकार्थकता, समानार्थकता, समनामता, समध्वन्यात्मकता, विलोमता।	12
पंचम	**कोश–निर्माण की समस्याएँ** : अनेकार्थकता, द्विभाषी और बहुभाषी कोशों के संदर्भ में, अलिखित भाषाओं का कोश निर्माण। कंप्यूटर और कोश निर्माण।	12

निबंधात्मक प्रश्न / आलोचनात्मक प्रश्न	3 X 15 =	45 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	3 X 5 =	15 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
योग	=	70 अंक

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षा अध्यापन / विशिष्ट व्याख्यान / फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।
मूल्यांकन प्रक्रिया : आंतरिक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम हेतु अर्हता :

सन्दर्भ ग्रन्थ : कोश विज्ञान

1	डोगरी– हिंदी– राजस्थानी शब्दकोश	– चंद्रप्रकाश देवल
2	हिंदी– उर्दू– अंग्रेजी शब्दकोश	– एम०एस०उस्मानी, सुधींद्र कुमार मीना उस्मानी
3	अंग्रेजी हिंदी परिभाषिक शब्दकोश	– डॉ० हरदेव बाहरी
4	हिंदी पर्यायवाची कोश	– भोलानाथ तिवारी
5	मुहावरा कोश	– हरिवंश राय शर्मा
6	सुभाषित कोश	– हरिवंश राय शर्मा
7	कहावत कोश	– समर
8	लोकोक्ति कोश	– हरिवंश राय शर्मा
9	उर्दू हिंदी शब्दकोश	– डॉ० सैयद असद अली
10	विद्यार्थी हिंदी शब्दकोश	– डॉ० ओमप्रकाश
11	भारतीय संस्कृति कोश	– लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'
12	अंग्रेजी–हिंदी समानार्थी शब्दकोश	– डॉ० बदरीनाथ कपूर
13	हिंदी मिजो अध्येता कोश	– अमर बहादुर सिंह व रवि प्रकाश श्रीवास्तव
14	हिंदी लुशाई द्विभाषी कोश	– रवि प्रकाश श्रीवास्तव
15	हिंदी–खासी द्विभाषी कोश	– रमा सूद, मीरा सरीन
16	हिंदी क्रिया, विशेषण शब्दकोश	– ज्योत्सना रघुवंशी
17	कौरवी शब्द कोश	– डॉ० कृष्ण चंद्र शर्मा
18	हिंदी तुकांत कोश	– रामनाथ सहाय
19	कम्प्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी शब्दकोश	– विनोद कुमार मिश्र
20	हिंदी–अंग्रेजी प्रशासनिक कोश	– कैलाश चंद्र भाटिया

कार्यक्रम / कक्षा : स्नातकोत्तर	वर्ष : द्वितीय	सेमेस्टर : तृतीय
	विषय : हिंदी	
पाठ्यक्रम कोड :	पाठ्यक्रम शीर्षक : **अनुवाद**	(सैद्धांतिकी)

पाठ्यक्रम उद्देश्य : गैर हिंदी स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए यह पाठ्यक्रम अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करता है। अनुवाद भाषा के ज्ञानात्मक महत्व के साथ–साथ उसे रोजगारपरक भी बनाता है। इसलिए अनुवाद के नियमों को जानना विद्यार्थियों के लिए भाषाई महत्व के साथ जीवन क्षेत्र में रोजगार के लिए भी नई संभावनाओं को सृजित करता है।

पाठ्यक्रम परिणाम : 1. अनुवाद की सैद्धांतिकी एवं उसके महत्व को समझेंगे। 2. प्रायोगिकी द्वारा भाषाई क्षमता विकसित होगी।

क्रेडिट : 4	ऐच्छिक पाठ्यक्रम
अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अर्हता अंक : 36

कुल कक्षा व्याख्यान / ट्यूटोरियल / – (साप्ताहिक घंटे) व्या० / ट्यू० : 5–1

खंड	विषय	कुल व्याख्यान संख्या : 75
प्रथम	अनुवाद : परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएँ। अनुवाद का स्वरूप : अनुवाद कला, विज्ञान अथवा शिल्प, सर्जना अथवा अनुकरण। अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगिकता एवं व्यावसायिक परिदृश्य।	10
द्वितीय	अनुवाद की इकाइयाँ : शब्द, पदबंध और वाक्य, पाठ। अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि : विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन / पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन। अनुवाद : स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थांतरण की प्रक्रिया, अनुदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ – संप्रेषण की प्रक्रिया। अनुवाद – प्रक्रिया की प्रकृति।	15
तृतीय	अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत। अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार – कार्यालयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक, मानविकी, संचारमाध्यम, विज्ञापन आदि। अनुवाद की समस्याएँ : सृजनात्मक अथवा साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ, कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, विधि साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, कोश एवं पारिभाषिक शब्दार्थ के निर्माण की समस्याएँ, मीडिया क्षेत्र के अनुवाद की समस्याएँ, विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएँ।	15
चतुर्थ	अनुवाद के उपकरण : कोश, पारिभाषिक शब्दावली, थिसारस, कम्प्यूटर आदि। मशीनी अनुवाद। अनुवाद के गुण। पाठ की अवधारणा और प्रकृति – पाठ शब्द, प्रति शब्द। शाब्दिक अनुवाद भावानुवाद छायानुवाद पूर्ण और आंशिक अनुवाद, सारानुवाद आशु अनुवाद	10
पंचम	व्यावहारिक अनुवाद (प्रश्नपत्र में दिए गए अंग्रेजी अवतरण का हिन्दी अनुवाद एवं हिंदी अवतरण का अंग्रेजी अनुवाद)	10

निबंधात्मक प्रश्न/आलोचनात्मक प्रश्न	3 X 15 =	45 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	3 X 5 =	15 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1 =	10 अंक
योग	=	70 अंक

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : कक्षाअध्यापन/विशिष्ट व्याख्यान/फिल्म एवं डाक्यूमेंटरी माध्यम का प्रयोग

1. डिजिटल तथा वेब लिंक : (web links)

अन्य विषयों के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया : आंतरिक लिखित परीक्षा

पाठ्यक्रम हेतु अर्हता :

सन्दर्भ ग्रन्थ : <u>अनुवाद</u>

1	अनुवाद समझे और करें	– डॉ विचार दास सुमन
2	अनुवाद – विमर्श एक अध्याय	– डॉ० प्रणव शर्मा
3	अंग्रेजी हिंदी अनुवाद व्याकरण	– सूरजभान सिंह
4	अनुवाद : भाषाएँ–समस्याएँ	– एन०ई० विश्वनाथ अय्यर
5	अनुवाद	– एन०ई० विश्वनाथ अय्यर
6	प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रयुक्ति और अनुवाद	– माधव सोनटक्के
7	अनुवाद के भाषिक पक्ष	– राजमणि शर्मा
8	अनुवाद क्या है	– राजमल बोरा
9	अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य	– रीतारानी पालीवाल
10	अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा	– डॉ० सुरेश कुमार
11	अनुवाद कार्यदक्षता : भारतीय भाषाओं की समस्याएँ	– सं० महेंद्रनाथ दुबे
12	भाषांतरण कला : एक परिचय	– डॉ० मुध धवन
13	हिंदी की वर्तनी तथा शब्द विश्लेषण	– आचार्य किशोरीदास वाजपेयी
14	कोश निर्माण प्रविधि एवं प्रयोग	– सं० प्रो० त्रिभवननाथ शुक्ल
15	प्रशासनिक हिंदी : ऐतिहासिक संदर्भ	– डॉ० महेशचंद्र गुप्त
16	साहित्यानुवाद : संवाद और संवेदना	– डॉ० आरसु
17	सर्वोदय आशुलिपि	– रूपचंद गौतम
18	अनुवाद और उत्तर आधुनिक अवधारणाएं	– श्री नारायण समीर
19	अनुवाद की प्रक्रिया : तकनीक और समस्याएं	– श्री नारायण समीर